Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 279 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, शुक्रवार 03 मई 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

सत्य भगवान है, सत्य लोक में सारभूत है।

Truth is god, truth is fundamental in this world.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

रेल ट्रैक से उतरे मालगाड़ी के डिब्बे, कई ट्रेनों का परिचालन बाधित

दरभंगा (आरएनएस)। दरभंगा के बेला मोड़ स्थित रैक प्वाइंट पर बुधवार देर रात मालगाड़ी के तीन डिब्बे पटरी से उतर जाने के कारण रेल परिचालन बाधित है। साथ ही बेला-मनीगाछी रूट पूर्णतः बाधित हो गया है। अब तक सिर्फ एक बोगी को पटरी पर लाया गया है। सूत्रों के मुताबिक बुधवार की रात लगभग 9 बजे बेला रेक पॉइंट पर लोडेड मालगाड़ी की तीन बोगी अचानक में पटरी से उतर गई। जानकारी के मुताबिक, घटना की सूचना मिलते ही रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी अभियंताओं के एक दल के साथ मौके पर पहुंच कर पटरी को दुरुस्त करने के प्रयास में लगे है।

बसपा ने जारी की छह उम्मीदवारों की लिस्ट

लखनऊ (आरएनएस)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने लोकसभा चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की एक और सूची जारी की। बसपा ने गुरुवार को छह लोकसभा और एक लखनऊ पूर्वी विधानसभा सीट के लिए उम्मीदवार के नाम का ऐलान किया है। पार्टी ने गोंडा लोकसभा सीट से सौरभ कुमार मिश्रा, डुमरियागंज से मोहम्मद नदीम मिर्जा, कैसरगंज से नरेंद्र पांडेय, संतकबीरनगर से नदीम अशफाक, बाराबंकी से शिवकुमार दोहरे और आजमगढ़ से मशूद अहमद को टिकट दिया है।

मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर बोला हमला

55 साल में 80 बार किया संविधान संशोधन, अब फैला रहे गलतफहमी : विष्णुदेव साय

सक्ति (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कांग्रेस को लेकर बड़ा हमला बोला है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस के लोग संविधान को लेकर गलतफहमी पैदा कर रहे हैं. मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि 55 साल में कांग्रेसियों ने 80 बार संविधान में संशोधन किया. कांग्रेस संविधान से खिलवाड़ करती है. सीएम साय ने कहा कि इमरजेंसी में गैर कांग्रेसी को जेल में डाल दिया था. कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे के भगवान शिव और प्रभु श्रीराम वाले बयान पर सीएम ने कहा कि इनके पास बोलने के लिए कुछ और बचा ही नहीं है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि कांग्रेस ने पांच साल छत्तीसगढ़ को लूटा। 55 से 60 साल तक देश को लूटा है. इनके प्रधानमंत्री पर करप्शन के आरोप लगे हैं. चाहे पं. नेहरू हो, चाहे इंदिरा गांधी हो, चाहे राजीव गांधी हो या मनमोहन सिंह हो, इनके सत्ता काल में तो रोज भ्रष्टाचार होता था.

जांजगीर के कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने निशाना साधते हुए कहा कि पहले भी सांसद का चुनाव लड़ चुके हैं पर कभी क्षेत्र में पलट कर नहीं देखा. छत्तीसगढ़ शासन में मंत्री थे, सरकारी बंगले से समान ले गए थे. उनकी पत्नी शासकीय भवन को अपना दफ्तर बना रखी थीं।

प्रियंका गांधी को राधिका खेड़ा के लिए लड़नी चाहिए लड़ाई : ओपी चौधरी

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान के पहले कांग्रेस में कहासुनी की खबर सामने आ रही हैं, एक ओर जहां कांग्रेस पार्टी में बगावत की खबर हैं तो वही दूसरी ओर वाद-विवाद की भी स्थिति बनती हुई नज़र आ रही हैं. प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में कांग्रेस की नेशनल मीडिया समन्वयक राधिका खेरा और संचार विभाग के प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला के बीच विवाद के मामले में बीजेपी ने कांग्रेस पर हमलावर हो गई है। गुरुवार को प्रियंका गाँधी के कोरबा में जनसभा से पहले मंत्री ओपी चौधरी ने राधिका खेड़ा मामले में प्रियंका गांधी पर निशाना साधा और कहा कि लड़की हूं लड़ सकती

हूं का नारा लगाने वाली प्रियंका गांधी आपका माता कौशल्या के धाम छत्तीसगढ़ में स्वागत है।

वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने कहा कि यहां सबसे पहले अपनी ही पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता बहन राधिका खेड़ा के लिए लड़ाई लड़नी चाहिए। वो रो-रो कर अपने साथ हुए दुर्व्यवहार की शिकायत कर रहीं हैं, कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है। आखिर एक बहन की इज्जत से बढ़कर कौन सा मोह आड़े आ रहा है? न्याय और माता-बहनों के सम्मान की जुमलेबाजी यहां नहीं चलेगी, क्योंकि जनता-जनार्दन सब जान चुकी है। अब की बार 400 पार, छत्तीसगढ़ मांगे भाजपा।

कोरबा में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा का भाजपा पर तीखा हमला, कहा

नेताओं की नीयत देखें, अपने अनुभव के आधार पर करें मतदान

40 मिनट के संबोधन में आधा दर्जन से ज्यादा बार खरबपति और उद्योगपति शब्द का किया प्रयोग

रायपुर (विश्व परिवार)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि मतदाता नेताओं की नीयत देखें और अपने अनुभव के आधार पर ही मतदान करें। छत्तीसगढ़ की कोरबा संसदीय क्षेत्र के चिरमिरी में कांग्रेस प्रत्याशी ज्योत्सना महंत के समर्थन में गुरुवार को आयोजित जनसभा में प्रियंका ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर एक के बाद आरोपों के तीर छोड़े।

अपने 40 मिनट से ज्यादा चले संबोधन में उन्होंने आधा दर्जन से ज्यादा बार खरबपति उद्योगपति शब्द का प्रयोग किया। इतनी ही बार अडाणी का नाम लिया। कांग्रेस के न्यायपत्र को सामने रखा। महिला, आदिवासी, युवा, किसानों की बात उठाई। उत्तर प्रदेश के उन्नाव से लेकर हाथरस की घटनाओं का जिक्र किया। महिला कुश्ती खिलाड़ियों के आंदोलन की बात उठाई। हसदेव आंदोलन की चर्चा की।

प्रियंका ने कहा कि भाजपा के नेता आएंगे धर्म और परंपराओं पर खतरे की बात कहकर आपके वोट ले जाएंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा में दो प्रकार के नेता है। पहले वो जो दूसरी पार्टियों में थे, सर्वाधिक भ्रष्ट थे उन्हें अब भाजपा में जगह मिली है वहीं दूसरे नेता वो हैं जो हवा हवाई बात करते हैं जिन्हें आम लोगों की

समस्या से कोई लेना देना नहीं है। धर्म की बात कह कर और पांच किलो राशन देकर भाजपा आपको निर्भर बनाए रखना चाहती है। कांग्रेस न्याय पत्र लागू कर आपको आत्मनिर्भर बनाने का वादा करती है।

प्रियंका ने कहा कि भारत के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि जब लोकसभा चुनाव के दौरान विपक्ष के दो-दो मुख्यमंत्री जेल में हैं। उन्होंने कहा कि देश का निर्माण अहिंसक आंदोलन से हुआ है। संविधान ने आंदोलन का अधिकार भी दिया है लेकिन मौजूदा सरकार आम लोगों की आवाज दबाने पर तुली है।

अपने भाषण में प्रियंका ने कई बार अपने पिता राजीव गांधी और दादी इंदिरा गांधी का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उनके पिता जब दौरे पर जाते थे तो गांव के लोग उन्हें चाय पिलाकर खराब सड़कों पर सवाल पूछते थे, डांटते थे। आज के दौर में नेताओं की यह जवाबदेही खत्म होती जा रही है।

कांग्रेस महासचिव ने कहा कि कांग्रेस ने कोयला खदानों का राष्ट्रीयकरण किया वहीं भाजपा खदानों का निजीकरण कर रही है। कांग्रेस महासचिव ने कहा कि मोदी मंचों पर खुद को ईमानदार कहते हैं, उन्हें देश में बेरोजगारी पर सच्चाई से अपनी बात कहनी चाहिए। मोदी आपके संघर्ष की बात नहीं करते।

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर लग रहे भ्रष्टाचार के आरोपों के बीच प्रियंका गांधी ने कहा कि चूंकि बघेल ने छत्तीसगढ़िया स्वाभिमान की बात कही थी, केंद्र से आंख मिलाकर बात करते थे इसलिए उनपर निशाना साधा जा रहा है।

प्रियंका गांधी ने यह भी कहा

इलेक्टोरेल बांड भ्रष्टाचार की सबसे बड़ी स्कीम है। भाजपा ने कोरोना के टीका बनाने वाली, गुजरात पुल हादसे से जुड़ी कंपनी से चंदा लिया। लोग खड़े- खड़े काम करते- करते मौत का शिकार बन रहे हैं। कोराना बनाने वाली कंपनी का टीका बनाने वाली कंपनी कह रही है कि एक दो प्रतिशत लोगों के साथ ऐसा हो सकता है। संविधान बदलने की बात भाजपा के छुटभैया कह रहे हैं लेकिन मोदी नहीं कहते। भाजपा का इतिहास रहा है कि वह पहले नकारती है फिर उसे लागू करती है।

कुरुक्षेत्र लोकसभा सीट से नवीन जिंदल ने पर्चा भरा, सीएम नायब सिंह सैनी रहे मौजूद

कुरुक्षेत्र (आरएनएस)। कुरुक्षेत्र लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार नवीन जिंदल ने गुरुवार को हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की मौजूदगी में अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया। नवीन जिंदल ने पर्चा दाखिल करने से पहले परिवार के सदस्यों के साथ पूजा, हवन व यज्ञ का आयोजन किया। इसके बाद वह नामांकन पत्र दाखिल करने रवाना हो गए। इस दौरान उनके साथ हरियाणा सीएम नायब सिंह सैनी भी थे।

उनका मुकाबला आम आदमी पार्टी के सुशील गुप्ता से होगा, जो इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवार हैं। उद्योगपति नवीन जिंदल का हरियाणा की राजनीति में बड़ा मुकाम है। वह बीते दिनों कांग्रेस से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए थे। वह कुरुक्षेत्र लोकसभा सीट से दो बार सांसद रहे हैं। इसके अलावा उद्योगपति नवीन जिंदल यूपीए सरकार के कार्यकाल में केंद्रीय मंत्री भी रह चुके हैं। 9 मार्च 1970 को जन्मे उद्योगपति नवीन जिंदल जेएसडब्ल्यू ग्रुप के चेयरमैन हैं।

कांग्रेस को मेरी पहली चुनौती- देश को लिखित में गारंटी दें कि वो संविधान बदलकर धर्म के आधार पर मुसलमानों को आरक्षण नहीं देंगे : पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस को दे डाली ये तीन चुनौतियां...

आणंद (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के आणंद के शास्त्री मैदान में चुनावी रैली में मंच से कांग्रेस को तीन चुनौतियां दे डाली। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस को मेरी पहली चुनौती- कांग्रेस और उनके चट्टे बट्टे देश को लिखित में गारंटी दें कि वो संविधान बदलकर धर्म के आधार पर मुसलमानों को आरक्षण नहीं देंगे। देश को बांटने का काम नहीं करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, मेरी दूसरी चुनौती- कांग्रेस देश को लिखित में दे कि वो एससी, एसटी, ओबीसी को मिलने वाले आरक्षण में सेंधमारी नहीं करेगी। उनका अधिकार नहीं छिनेगी, डंका नहीं डालेगी।

पीएम मोदी ने कांग्रेस को तीसरी चुनौती देते हुए कहा कि कांग्रेस देश को लिखित में गारंटी दे कि जिन-जिन राज्यों में कांग्रेस की और उनके साथियों की सरकार है, वो कभी भी वोटबैंक की गंदी राजनीति नहीं करेंगे। वो बैकडोर से ओबीसी का कोटा काटकर मुसलमानों को आरक्षण नहीं देंगे। ये मेरी तीन चुनौतियां है, शहजादे हिम्मत है तो आ जाओ। संविधान को माथे पर नाचने से बात नहीं बनती, संविधान के लिए जीना, संविधान के लिए मरना, ये सीखना है तो मोदी के पास आओ। मैं जानता हूं कांग्रेस मेरी यह चुनौती स्वीकार नहीं करेगी।

पीएम मोदी ने कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा, संयोग देखिए, आज भारत में कांग्रेस कमजोर हो रही है। यानी सूक्ष्मदर्शी यंत्र लेकर भी कांग्रेस को ढूंढना मुश्किल हो रहा है। लेकिन मजा ये है कि यहां कांग्रेस मर रही है और वहां पाकिस्तान रो रहा है। आपको पता चला होगा कि अब कांग्रेस के लिए पाकिस्तानी नेता दुआ कर रहे हैं। शहजादे को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान उतावला है और कांग्रेस तो पाकिस्तान की मुरीद है ही। पाकिस्तान और कांग्रेस की ये पार्टनरशिप अब पूरी तरह एक्सपोज हो गई है। देश के दुश्मनों को आज भारत में मजबूत सरकार नहीं चाहिए। उनको कमजोर सरकार चाहिए। देश के दुश्मनों को 2014 से पहले की सरकार चाहिए।

पीएम मोदी ने राहुल गांधी का नाम लिए बिना तंज कसते हुए कहा, कांग्रेस के शहजादे आजकल माथे पर संविधान रखकर नाच रहे हैं। लेकिन, कांग्रेस मुझे जवाब दे कि जिस संविधान को आज माथे पर रखकर नाच रहे हो, क्यों 75 साल तक हिंदुस्तान के सभी हिस्सों पर ये संविधान लागू नहीं होता था। मोदी के आने से पहले इस देश में 2 संविधान, 2 झंडे थे। शहजादे की पार्टी कांग्रेस ने, इनके परिजनों ने देश में संविधान लागू नहीं होने दिया था। कश्मीर में हिंदुस्तान का संविधान लागू नहीं होता था। धारा 370 दीवार बनकर बैठी थी। सरदार पटेल की भूमि से आए इस बेटे ने उस 370 को जमींदोज कर दिया और सरदार साहब को श्रद्धांजलि दी।

भाजपा ने बृजभूषण सिंह के बेटे को दिया टिकट, रायबरेली से दिनेश प्रताप सिंह को बनाया उम्मीदवार

नई दिल्ली (आरएनएस)। भाजपा ने उत्तर प्रदेश के कैसरगंज लोकसभा सीट से वर्तमान सांसद बृजभूषण शरण सिंह का टिकट काटकर उनके बेटे करण भूषण सिंह को उम्मीदवार घोषित कर दिया है। पार्टी ने इसके साथ ही उत्तर प्रदेश की हाई प्रोफाइल लोकसभा सीट रायबरेली से अपने उम्मीदवार का नाम भी घोषित कर दिया है। पार्टी ने योगी सरकार में मंत्री दिनेश प्रताप सिंह को रायबरेली से लोकसभा उम्मीदवार घोषित कर दिया है। पार्टी ने गुरुवार को लोकसभा उम्मीदवारों की 17 वीं सूची जारी कर इन दोनों उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की। वहीं इसके साथ ही भाजपा ने ओडिशा विधानसभा चुनाव को लेकर भी अपने 6 उम्मीदवारों की पांचवी सूची जारी कर दी है। पार्टी ने घासीपुरा विधानसभा से शंभूनाथ राउत, भोगराई से आशीष पात्रा को चुनावी मैदान में उतारा है।

राजनाथ सिंह ने राजद की 'लालटेन' को दिखाया 'ताप', बोले- हमारे पायलट हवा में उड़ा देंगे

केंद्रीय रक्षा मंत्री ने कहा- दुनिया कान खोलकर सुनती है भारत की बात

छपरा (एजेंसी)। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि बिहार में 'लालटेन युग' किसी हाल में लौटकर नहीं आना चाहिए। उन्होंने राष्ट्रीय जनता दल को घेरते हुए राजीव प्रताप रूडी की तारीफ भी की। वह रूडी के समर्थन में यहां आयोजित जनसभा में बोल रहे थे। राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि रूडी पेशे से पायलट भी हैं, इसलिए वह हवाई जहाज उड़ाते हैं। वैसे ही सारण के सभी लोकसभा प्रत्याशी को हवा में उड़ा देंगे। भाजपा की विचारधारा को देखते हुए एमपी और गुजरात में कांग्रेस के प्रत्याशी नामांकन के बाद भाजपा को अपना समर्थन दे रहे हैं।

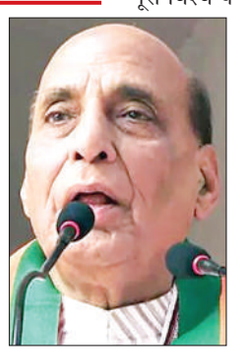

उन्होंने कहा कि 400 पार का जो हमने लक्ष्य लिया है, वह निश्चित ही पूरा कर लेंगे। 10 साल से हम केंद्र की सरकार में हैं, हम विश्व स्तर पर काफी मजबूत हुए हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सारण लोकसभा सीट से एनडीए प्रत्याशी के पक्ष में राजेंद्र स्टेडियम मैदान में आयोजित आशीर्वाद सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पहले भारत की बातों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गंभीरता से नहीं लिया जाता था। उन्होंने कहा कि आज भारत जब बोलता है तो पूरा विश्व कान खोलकर सुनता है। 2014 तक भारत धन-दौलत के मामले में विश्व स्तर पर 11वें स्थान पर था। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में अब भारत पांचवें स्थान पर है।

राजनाथ सिंह ने कहा कि विश्व की सारी एजेंसियां यह बता रही हैं कि भारत सबसे तेजी से विकास करने वाला देश है। रक्षा मंत्री ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में कश्मीर से लेकर भारत के कई राज्यों में आतंकवादी घटनाएं होती थीं। आज कश्मीर में कुछ घटनाओं को छोड़कर हर जगह शांति है। राजनाथ ने कहा कि रक्षा मंत्री होने के नाते मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भारत की सारी सीमाएं बिल्कुल सुरक्षित हैं। अब भारत अपनी सीमा के अंदर घुसपैठियों को मार गिराता है और जरूरत पड़ती है तो सीमा के उस पार जाकर भी प्रहार सकता है। यह भारत की हैसियत है। उन्होंने जनधन खाता, आधार और मोबाइल को भारत का त्रिमूर्ति करिश्मा बताया और कहा कि इससे दिल्ली के खाते से 100 पैसा चलता है तो नागरिक के खाते में 100 पैसा पहुंच जाता है।

वित्त वर्ष 25 की आशाजनक शुरुआत, एनएमडीसी ने 50 एमटी का रखा लक्ष्य

हैदराबाद (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय खनन कंपनी, एनएमडीसी ने वित्त वर्ष 25 के पहले महीने में लौह अयस्क का 3.48 मिलियन टन का उत्पादन किया और 3.53 मिलियन टन बिक्री की।

वित्त वर्ष 24 में रिकार्ड 45 एमटी वॉल्यूम की पृष्ठभूमि में एनएमडीसी का मजबूत प्रदर्शन जारी रहा। जहां उत्पादन पिछले वर्ष की इसी अवधि के अनुरूप था, कंपनी ने अप्रैल 2023 की तुलना में बिक्री में लगभग 3त्न की वृद्धि हासिल की।

एनएमडीसी के किरंदुल और दोणिमलै लौह अयस्क खनन परिसरों ने क्रमश: 13.59 एलटी और 11.33 एलटी उत्पादन के साथ अप्रैल माह का अबतक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में किरंदुल में उत्पादन में 7त्न और दोणिमलै में 12त्न की वृद्धि हुई। कंपनी के बचेली कॉम्प्लेक्स ने अप्रैल 2024 में 14.86 एलटी प्रेषण किया, जो कि अप्रैल 2023 से 12त्न अधिक है और स्थापना के बाद से इसका अप्रैल माह में अबतक का सबसे अधिक प्रेषण है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) श्री अमिताभ मुखर्जी ने देश की लौह और इस्पात की मांग को पूरा करने के लिए एनएमडीसी की क्षमता में विश्वास व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हम भारत के लौह अयस्क उत्पादन और मांग के विकास गति के अनुरूप वित्त वर्ष 25 में हमारे वॉल्यूम में 10त्न की वृद्धि को लक्षित कर रहे हैं। हमारे सभी खनन परिसरों ने एक आशाजनक शुरुआत की है और नई खनन प्रौद्योगिकी के साथ सामंजस्य स्थापित करने, उद्योग की चुनौतियों का सामना करने, और 50 एमटी की उपलब्धि हासिल करने के लिए तैयार हैं।

लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा, कांग्रेस का कोई नेता आए फर्क नहीं पड़ता

रायपुर (आरएनएस)। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और छत्तीसगढ़ के प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट के सूरजपुर दौरे को लेकर केबिनेट मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने तंज कसा है।

दअरसल सचिन पायलट सरगुजा लोकसभा सीट की कांग्रेस प्रत्याशी शशि सिंह के समर्थन में प्रचार के लिए सूरजपुर पहुंचे हुए थे। जहां वह दो चुनावी सभा में शामिल हुए और आम सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में वोट करने की अपील की।

वहीं अब सचिन पायलट के दौरे को लेकर मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने तंज कसते हुए कहा की कांग्रेस के कितने भी बड़े नेता आ जाए उससे फर्क नहीं पड़ेगा। सरगुजा लोकसभा सीट में भाजपा की जीत तय है।

मुख्य सचिव जैन और उनकी पत्नी को कलेक्टर डॉ. सिंह ने आमंत्रण पत्र व पीला चावल देकर किया मतदान का आग्रह

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती कंगाले के घर पहुंचे कलेक्टर, आमंत्रण पत्र व पीला चावल देकर मतदान का किया आग्रह

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने आज से कलेक्टर की पाती अभियान की शुरुआत की है। कलेक्टर ने सर्वप्रथम अपने ही कॉलोनी से ही कलेक्टर की पाती अभियान की शुरूआत की। उन्होंने कॉलोनी में रहने वाले सेवानिवृत्त आईएफएस श्री उपाध्याय के निवास पर पहुंचकर मतदान का आग्रह करते हुए आमंत्रण पत्र व पीला चावल दिया। इसके बाद कलेक्टर के निवास पर ही आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की टोली पहुंच गई और उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता सिंह को आमंत्रण पत्र और पीला चावल देकर मतदान के लिए आग्रह किया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का समूह हाथ में तख्तियां लिए हुए जिसमे मतदान के आग्रह का स्लोगन लिखा हुआ था। साथ में मतदान अपील के नारे लगा रहे थे।

इसी अभियान के तहत कलेक्टर ने छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन के निवास पर पहुंचकर कलेक्टर ने मुख्य सचिव को और महिला बाल विकास अधिकारी निशा मिश्रा ने मुख्य सचिव श्री जैन की पत्नी श्रीमती रितु जैन को टिका लगाकर, पीला चावल और आमंत्रण पत्र देकर मतदान करने की अपील की। मुख्य सचिव ने कलेक्टर और जिला प्रशासन को शुभकामनाएं दी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रीना बाबा साहेब कंगाले के निवास पर भी कलेक्टर ने पहुंचकर आमंत्रण पत्र देते हुए पीला चावल देकर मतदान करने का आग्रह किया। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने जिला प्रशासन के इस कार्य की सराहाना की और कहा कि निश्चित ही इस बार मतदान का प्रतिशत बढ़ेगा। इस पहल से मतदाताओं में जागरूकता बढ़ेगी और घरों से निकलकर लोग मतदान करने जरूर पहुंचेंगे। साथ ही मुख्यमंत्री के सचिव श्री पी. दयानंद व श्री एस. बसवराजू को भी आमंत्रण पत्र उनके निवास पर कलेक्टर ने दिया। कलेक्टर ने उन्हें भी पीला चावल भेंटकर मतदान करने का आग्रह किया। लोकायुक्त श्री टी.पी. शर्मा के निवास पर पहुंचकर कलेक्टर ने पाती सौंपी और मतदान करने का आग्रह किया। इस अवसर पर नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा, जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप, डीपीओ श्री अमित सिन्हा सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि मतदान के आग्रह करने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ता घर-घर पहुंचकर मतदान का आग्रह करते हुए आमंत्रण भी दे रही है।

बेतरतीब पार्किंग के चलते लोगों को आवागमन में हो रही असुविधा

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। नवापारा नगर के गंज रोड में स्थित भारतीय स्टेट बैंक के ग्राहकों द्वारा बैंक के बाहर मुख्य मार्ग पर की जाने वाली बेतरतीब पार्किंग के चलते लोगों को आवागमन में काफी असुविधा हो रही है। लेकिन सबकुछ जानते हुए भी बैंक प्रबंधन इस दिशा में कोई पहल नहीं कर रहा है। इससे लोगों में आक्रोश बढ़ रहा है। भारतीय स्टेट बैंक के बाहर रोज सुबह बैंक खुलने से लेकर दोपहर लगभग 2 बजे तक सड़क पर बैंक के ग्राहकों द्वारा अपनी-अपनी गाड़ियां पार्क करने से मुख्य मार्ग इस कदर संकरा हो जाता है कि चारपहिया तो दूर दुपहिया वाहनों का भी निकलना मुश्किल हो जाता है। गंज रोड नगर का व्यस्ततम मार्ग है और यही वजह कि स्टेट बैंक के सामने से सैंकड़ों वाहन प्रतिदिन आते-जाते हैं। ऐसे में बैंक के सामने बेतरतीब पार्किंग होने के चलते लोगों को कितनी मुश्किल होती होगी, इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। बड़ी बात यह है कि लोगों को हो रही इस परेशानी को जानने, देखने और समझने के बाद भी स्थानीय पालिका प्रशासन द्वारा भी इस दिशा में कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। इस संबंध में स्टेट बैंक के मैनेजर और नगर पालिका के सीएमओ से चर्चा करने पर दोनों ने ही हम इस संबंध में कुछ नहीं कर सकते कहकर पल्ला झाड़ लिया। वहीं दूसरी और थाना प्रभारी अवध राम साहू ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए कहा कि बैंक के बाहर होने वाली बेतरतीब पार्किंग को व्यवस्थित करने की जिम्मेदारी बैंक प्रबंधन की है। इस संबंध में हमारे द्वारा भी समय-समय पर बैंक प्रबंधन को समझाइश दी जाती रही है। मैं इस विषय पर फिर से बैंक प्रबंधन से चर्चा कर उन्हें इस विषय को गंभीरता से लेने कहूंगा।

पत्रकारों के पेंशन और आवास की समस्या का होगा समाधान : अवनीश अवस्थी

कम सैलरी में पत्रकारों का 24 घंटे काम करना सराहनीय : पवन सिंह चौहान

यूपी वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन ने 14 सूत्रीय मांगों का सौंपा ज्ञापन

लखनऊ (विश्व परिवार)। राजधानी लखनऊ में मजदूर दिवस के अवसर पर यूपी प्रेस क्लब में यूपी वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन के तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पत्रकारों के लिए पेंशन योजना, पत्रकार सुरक्षा कानून, पीजीआई में सभी श्रमजीवी पत्रकारों को चिकित्सा सुविधा और डेस्क कर्मियों को प्रेस मान्यता दिए जाने की मांग की गयी। यूनियन ने मुख्यमंत्री को संबोधित इन 14 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सीएम के सलाहकार और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अवनीश अवस्थी को सौंपा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश अवस्थी ने मई दिवस पर सभी लोगों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि जादूगर अगर जादू दिखा दे तो आवास और पेंशन की समस्या खत्म हो जाय। मुख्यमंत्री ने कोविड में खत्म हुए 122 पत्रकारों के परिवार को सहायता दी थी। उन्होंने पत्रकारों को आश्वस्त करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव चल रहा है इसलिए ज्यादा नहीं बोल सकता हूं। लेकिन पत्रकारों के पेंशन और आवास की समस्या का समाधान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो भी मजदूर है जहाँ भी काम कर रहा उसकी इज्जत करे। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री का विकसित भारत का सपना पूरा होगा। अवनीश अवस्थी ने मंच से वहां मौजूद सभी लोगों से मतदान करने की भी अपील की।

इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य पवन सिंह चौहान ने सभी पत्रकारों को मजदूर दिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि पत्रकारों की इतनी कम सैलरी पर 24 घंटे काम करना बहुत बड़ी बात है। रात में घटना हो या दिन में बारिश में ठंड में गर्मी में लगातार काम करते है। श्रमिक के काम का एक समय होता हैं लेकिन पत्रकार के काम करने का घंटा तय नहीं रहता। उन्होंने कहा कि वह सरकार से पत्रकारों के हितों के लिए मजबूती से पैरवी करेंगे।

कार्यक्रम में यूपी प्रेस क्लब के अध्यक्ष रवींद्र कुमार सिंह ने कहा कि पत्रकार और पत्रकारिता दोनों संक्रमण काल के दौर से गुजर रहे हैं। सरकार पत्रकारों के हितों का संरक्षण करने के उपाय करें। अखबार चलाने वाले मालिकान अब संविदा के तहत पत्रकारों को नौकरी में रखते हैं। इसलिए नौकरी खत्म होने का संकट हमेशा बना रहता है।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश श्रमजीवी वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष हसीब सिद्दीकी ने कहा कि पत्रकारों को बिना किसी दबाव के कार्य का माहौल बरकरार रखा जाए। पत्रकारों के उत्पीड़न को गंभीरता से लेते हुए सरकार इसके समाधान की व्यवस्था करे।

मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश अवस्थी के माध्यम से मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन में मांग की गयी है कि मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, केरल समेत लगभग एक दर्जन से ज्यादा राज्यों में पत्रकारों को पेंशन योजना का लाभ दिया जा रहा है। यूपी सरकार भी पत्रकारों के लिए शीघ्र ही पेंशन योजना का ऐलान करे। ज्ञापन में मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के पिछले कार्यकाल का उल्लेख किया गया है जिसमें पत्रकारों के लिए 20 हजार रुपये प्रतिमाह पेंशन देने का निर्णय लिया गया था। ज्ञापन में न्यूज़ आधारित यूट्यूब चैनलों के लिए भी नियमावली बनाकर उन्हें प्रेस मान्यता देने तथा रेल किराए में 50 प्रतिशत की छूट बहाल करने और प्रेस काउंसिल के स्थान पर मीडिया काउंसिल गठित करने की केंद्र सरकार को संस्तुत करने की मांग भी की गयी है। दिवंगत पत्रकारों के परिवारों की आर्थिक सहायता के लिए स्थायी व्यवस्था करने और राजमार्गों पर राज्य मुख्यालय में मान्यता प्राप्त पत्रकारों के साथ-साथ राज्य एवं जिला स्तरीय संवाददाताओं के प्रेस वाहनों को टोल टैक्स से छूट देने की मांग भी ज्ञापन में की गयी है। इसके अलावा लघु एवं मध्यम समाचार पत्रों को सरकारी विज्ञापनों का एक निश्चित कोटा निर्धारित करने की मांग भी मुख्यमंत्री को भेजे गए ज्ञापन में की गई है।

इस अवसर पर सुरेश बहादुर सिंह, लखनऊ मंडल इकाई के अध्यक्ष शिवशरण सिंह, प्रदेश महामंत्री पीके तिवारी, मनोज मिश्रा, मुकुल मिश्रा, नितिन श्रीवास्तव, आदर्श प्रकाश सिंह, देवराज सिंह, नवलकांत सिन्हा, दीपक गिडवानी, राकेश पांडे, आदित्य सिंह, राजेश शुक्ला, प्रद्युम्न तिवारी, अर्चना गुप्ता, जुबेर अहमद, रजा रिज़्वी, अब्दुल वाहिद, कुटुबु ल्ला, तारिक फारुकी, भरत सिंह नेगी, अजय कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

मतदाताओं को इलाज में मिलेगी विषेश छूट

स्वरा सिद्धी हॉस्पिटल में ओपीडी, पैथोलॉजी, एक्स-रे एवं सोनोग्राफी में 50 प्रतिशत की छूट

दुर्ग (आरएनएस)। जिले में लोकसभा आम चुनाव-2024 में मतदाताओं का प्रतिशत बढ़ाने में कई निजी स्वास्थ्य संस्थानों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा सहयोग किया जा रहा है। विगत दिनों में विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा मतदाताओं को छूट की पेशकश की घोषणा की गई। इसी कड़ी में एक और स्वास्थ्य संस्थान स्वरा सिद्धी हॉस्पिटल मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल द्वारा इस मतदाता जागरूकता अभियान में शामिल होने की पहल की गई है। कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी ने मतदाता जागरूकता में उनके योगदान हेतु संस्थान के निर्देशक एवं सभी चिकित्सकों की सराहना करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार स्वरा सिद्धी हॉस्पिटल मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल के निर्देशक ने कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री चौधरी को प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्होंने मतदाताओं को ओपीडी, पैथोलॉजी, एक्स-रे, सोनोग्राफी एवं भर्ती में 50 प्रतिशत की विशेष छूट देने की घोषणा की है। नागरिकों को उंगली पर मतदान की अमिट स्याही दिखाने पर 07 एवं 08 मई को छूट मिलेगी।

शब्दाक्षर की शाम शायरों के नाम

रायपुर (विश्व परिवार)। गजल एक लोकप्रिय किंतु कठिन विधा है जिसमें उस्ताद के मार्गदर्शन की सलाह देते हुए अंचल के सुप्रसिद्ध युवा साहित्यकार, गीतकार एवं शायर राजेश जैन राही जी ने राष्ट्रीय साहित्यिक (पंजीकृत) संस्था शब्दाक्षर की प्रदेश इकाई द्वारा रायपुर शहर के वृंदावन हॉल में आयोजित काव्य अनुष्ठान में कार्यक्रम अध्यक्ष पद की गरिमा बढ़ाई! मुख्य अतिथि गजल के सशक्त हस्ताक्षर सुदेश मैहर एवं विशिष्ट अतिथि गजल की दुनिया में ऊंचाइयों को छूने वाले सुप्रसिद्ध शायर श्री सुखनवर हुसैन ने मंचासीन होकर मंच को समृद्ध किया।

मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के पश्चात किरण वैद्य द्वारा सुमधुर सरस्वती वंदना का गायन मां शारदे के आव्हान के साथ सभागार को संगीतमय कर गया। स्वागत उद्बोधन शब्दाक्षर की प्रदेश अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजिका नीता श्रीवास्तव द्वारा किया गया। मंचासीन अतिथियों के परिचय पर प्रकाश डाला मधु सक्सेना जी ने। शब्दाक्षर संस्था की स्थापना से लेकर 25 राज्यों तक ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले संस्थापक अध्यक्ष रविप्रताप द्वारा स्थापित शब्दाक्षर से परिचित कराया प्रचार मंत्री मीना शर्मा जी ने। तत्पश्चात शुरू हुई काव्य गोष्ठी जिसमे शहर के स्थापित और चर्चित कवि -कवयित्रियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और देर शाम तक काव्य गंगा प्रवाहित होती रही। शायरा प्रज्ञा त्रिवेदी ने अपने बेहतरीन संचालन द्वारा कार्यक्रम को ऊंचाई प्रदान की। अंत में शब्दाक्षर के उपाध्यक्ष अनिल श्रीवास्तव द्वारा आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गई।

कार्यक्रम में नीलिमा मिश्रा, दिलीप बरवंडकर, शकुंतला तरार, चंद्रकांता अग्रवाल, नीलम शुक्ला, गोपाल शुक्ला, आलिम नकवी, सुरेन्द्र रावल, सुरेश तिवारी, रामेश्वर शर्मा, ब्रिगेडियर प्रदीप यदु, मंजू यदु, कल्पना यादव, चंद्रकला त्रिपाठी, अमृता शुक्ला छविलाल सोनी, के पी सक्सेना, साधना सक्सेना, लतिका भावे, आलिम नकवी, आर डी अहिरवार, आरिफ, विजया, लतिका भावे, जाया भावे, सिद्धार्थ श्रीवास्तव सहित शहर के गणमान्य ने शामिल होकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

मतदान जागरूकता के प्रति फ्लैश लाईट मार्च निकाला गया

भिलाईनगर (आरएनएस)। मतदाता जागरूकता अभियान के तहत सिविक सेंटर भिलाई में फ्लैश लाईट मार्च निकल कर अधिकारी कर्मचारियों ने सारे काम छोड दो सबसे पहले वोट का नारा बुलंद किये। निगम भिलाई द्वारा जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देश पर स्वीप कार्यक्रम अन्तर्गत बुधवार की शाम सिविक सेंटर में एकत्र हुए अधिकारी, कर्मचारी, समाज सेवी संस्था तथा आम नागरिकों ने अपने मोबाईल का फ्लैश लाईट जला कर रैली निकाला और लोगो को आगामी लोकसभा चुनाव के मतदान दिवस 7 मई को अपने घर से निकल कर मतदान करने की अपील किये। रैली में शामिल लोगो ने अपने हाथ में मतदान करना हेतु विभिन्न स्लोगन लिखे तख्ती लेकर चल रहे थे। रैली सिविक सेंटर का भ्रमण कर पार्किंग स्थल के पास गोल घेरे में खडे होकर सभी ने बिना भेदभाव,जाति,पंथ से उपर उठ कर निर्भिक होकर लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदान करने का शपथ लिए।

बुनियादी शिक्षा को मजबूती दे रही अदाणी फाउंडेशन की बाला पेंटिंग

सामाजिक सहभागिता के अंतर्गत 10 गांवों के सरकारी स्कूल भवनों का हो रहा कायाकल्प

रायपुर (विश्व परिवार)। जिले के तिल्दा विकासखंड में अदाणी फाउंडेशन द्वारा सामाजिक सहभागिता के अंतर्गत 10 ग्राम पंचायतों के स्कूलों में बाला पेंटिंग कराया जा रहा है। अदाणी पॉवर लिमिटेड, रायपुर के सामाजिक सरोकारों के तहत पास के ग्राम रायखेड़ा, गैतरा, चिचोली, गौरखेड़ा, भाटापारा, मुरा, ताराशिव, कोनारी, खम्हरिया और भाटपारा गांव में स्थित 10 शासकीय विद्यालयों में बाला पेंटिंग कार्य से कक्षाओं का कायाकल्प हो रहा है। इस कार्य से करीब 1000 बच्चों को इसका फायदा मिल रहा है। इसका उद्देश्य अंचल में बेहतर शिक्षा प्राप्त कर स्थानीय बच्चे अपना आर्थिक और सामाजिक विकास कर देश को आगे बढ़ाने में भी योगदान दे सकें

वित्तीय वर्ष 2023-24 में भी अदाणी फाउंडेशन द्वारा आसपास के 14 ग्रामों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका संवर्धन के कई कार्य किये जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में स्थानीय स्तर पर बच्चों के गुणवत्ता युक्त शिक्षा एवं बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा देने विभिन्न कार्य किये गए हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में बाला पेंटिंग के माध्यम से बुनियादी शिक्षा को काफ़ी रोचक और आकर्षक बनाया गया है। बच्चों को बाला पेंटिंग में की गई रचनात्मक चित्रकारी, और अधिक रोचक बना रही है। साथ ही आकर्षक रंगीन चित्रकारी से बच्चों में शिक्षा के प्रति उत्सुकता बढ़ी है। बाला पेंटिंग से बच्चों में रचनात्मक सोच के साथ ही चित्रों को देखकर सीखने और अनुशरण करने के गुणों में वृद्धि हो रहे है। अदाणी फाउंडेशन के इस पहल के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में महत्व पूर्ण सुधार हो रहा है। जहां फाउंडेशन द्वारा शिक्षा स्वस्थ और आजीविका के क्षेत्र में सुधार के लिए पहल करता है। बाला पेंटिंग के माध्यम से बुनियादी शिक्षा में सुधार से बच्चों भविष्य को उज्जवल बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./10132/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10132
वार्ड का नाम- 59 - मोरेश्वर राव गद्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR653O00019 जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती YAMINI SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती AJAY SAHU के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती DILIP YADAV पिता/पति श्री/श्रीमती JAGANNATH YADAV ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ MALMA BIKRINAMA & SHAPATH PATR/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री रमेश कुमार जायसवाल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह पैरेंट्स मीट में मिले पालकों...पेज-08 का शेष

उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक के युग में बच्चों के समक्ष सूचनाओं के स्त्रोत असीमित है, ऐसे में सदाचार, आत्मानुशासन व सत्यनिष्ठ प्रयासों से आगे बढ़ने की प्रेरणा घर की दहलीज़ से स्कूल की कक्षाओं में एक समान मिलनी चाहिए। इस संवाद कार्यक्रम में नगर निगम कमिश्नर श्री अबिनाश मिश्रा, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विश्वदीप, जिला शिक्षा अधिकारी श्री विजय खंडेलवाल सहित 700 से भी अधिक शिक्षक व पालक उपस्थित थे। आसन्न लोकसभा निर्वाचन के संबंध में चर्चा करते हुए उन्होंने सभी से मतदान की अपील करते हुए कहा कि भारतीय लोकतंत्र में आम नागरिकों को मतदान का अधिकार लंबे संघर्ष व कई चुनौतियों के बाद मिला है एवं कई महा नायकों को इस हेतु शहादत देनी पड़ी है। मतदान केवल वर्तमान व भविष्य के आयाम निर्धारण का काम नहीं करती, अपितु अतीत में देश में लोकतंत्र के निर्माण में शहादत देने वाले अमर सपूतों को श्रद्धांजलि की जिम्मेदारी होती है, ऐसे में हर नागरिक का दायित्व है कि 07 मई को सबसे पहले मतदान कर देश के प्रति अपनी उत्तरदायित्व का निर्वहन करें। उन्होंने कहा कि 05 मई को आओ जाने अपने बूथ को कार्यक्रम के तहत प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक अपने मतदान केन्द्र का अवलोकन करें एवं वहां उपलब्ध समस्त सुविधाओं से अवगत होकर दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करें। संवाद के पश्चात उपस्थित लोगों को कलेक्टर डॉ. सिंह ने मतदान की शपथ दिलाई एवं उपस्थित पालकों ने सारगर्भित उद्बोधन से मार्गदर्शन के लिए कलेक्टर डॉ. सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./11152/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 02-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11152
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR227S00211 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती ATUL KUMAR SHARIVASTAVA पिता/पति श्री/श्रीमती J.N.L. SHRIVASTAVA केनाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती श्री संजय कुमार गुहा पिता/पति श्री/श्रीमती पिता स्व. श्री नरेन्द्र कुमार गुहा ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./11104/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 02-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11104
वार्ड का नाम-12 - महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR235D00131 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती NANDLAL पिता/पति श्री/श्रीमती NEBHAN DAS के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती श्री कमलेश कुमार जसवानी पिता/पति श्री/श्रीमती पिता स्व. श्री रावल दास जसवानी ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत दानपत्र/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./8268/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 8268
वार्ड का नाम- 18 - बालगंगाधर तिलक वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 18 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR110D00337 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती K. GAURI SHANKAR पिता/पति, श्री/श्रीमती K. SHAYULU के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती NANDKISHOR MESHRAM पिता/पति, श्री/श्रीमती SHRI RAM MESHRAM ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./11175/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 02-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11175
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR235C0221A जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती PRASHUN MAHAWAR पिता/पति, श्री/श्रीमती ALOK MAHAWAR के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती श्री विष्णूराज गिरी गोस्वामी पिता/पति, श्री/श्रीमती पिता- श्री गजराज गिरी गोस्वामी ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 04 रायपुर
मामले की श्रेणी : राजस्व

संदर्भ :- जिला- रायपुर तहसील-रायपुर प.ह.न.-00083 कान्दुल ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक-RD 202324440726900070

ईश्तहार

तहसील रायपुर के प.ह.न. 00083 के अंतर्गत ग्राम कान्दुल के वर्तमान भूमिस्वामी शान्ति बेवा लखनलाल चंदशेखर पिता/पति-लखनलाल पता आशा करुणा कु विजयलक्ष्मी भूमिकागोपाल पिता/पति-लखनलाल पता राजेन्द्र गोपाल रामचंद्र रामानन्द कुमारीबाई पिता/पति-रामगुलाम पता शिवकुमार दिलीपकुमार कैलाशकुमार पिता/पति-गोविन्द पता, प्रदीप राकेश स्वाती पिता/पति-भरतलाल खिल्ली बेवा भरतलाल पता, रामकुमार उषा कुन्ती कल्याणी मिथलेश पिता/पति-गोविन्द पता, मेहतरीन पिता/पति-गोविन्द पता के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 263/4(0.1340) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/क्रेता राजेन्द्र, गोपाल, रामानन्द, कुमारी बाई पिता/पति-रामगुलाम पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, शिवकुमार, दिलीप कुमार, कैलाश कुमार पिता/पति-गोविन्द पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, रामकुमार, उषा, कुन्ती, कल्याणी, मिथलेश पिता/पति-गोविन्द पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, शकुन बाई पिता/पति-स्व. रामचन्द यदु पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, शान्ति पिता/पति-लखनलाल पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, गीता यदु, राज कुमार पिता/पति-स्व. रामचन्द्र पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, चन्द्रशेखर पिता/पति-लखनलाल पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, आशा, करुणा, कु. विजयलक्ष्मी, भूमिका गोपाल पिता/पति-लखन लाल पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर, प्रदीप, स्वाती पिता/पति-भरतलाल खिल्ली बेवा भरतलाल पता-कुशालपुर रायपुर तहसील व जिला रायपुर के नाम पर पंजीयन/फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 06/05/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 04 रायपुर पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 10/04/2024 को जारी किया जाता है।

अतिरिक्त तहसीलदार: Tulsi Rathore
अतिरिक्त तहसीलदार रायपुर (छ.ग.)
रायपुर

न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 04 रायपुर
मामले की श्रेणी : राजस्व

संदर्भ :- जिला- रायपुर तहसील-रायपुर प.ह.न.-00083 कान्दुल ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक-RD 202324440726900070

ईश्तहार

तहसील रायपुर के प.ह.न. 00083 के अंतर्गत ग्राम कान्दुल के वर्तमान भूमिस्वामी शांति यदु पिता/पति-स्व.लखनलाल पता-कांदुल, रामचन्द पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, आशा बाई पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल, कुमारी बाई पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, भूमिका गोपाल पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल राजेन्द्र पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, करुणा यादव पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल, प्रदीप., राकेश स्वाती, पिता/पति-भरतलाल, खिल्ली बाई पति भरतलाल पता-कांदुल, गोपाल पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, कुमारी विजय यदु पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल, चन्द्रशेखर पिता/पति-स्व. लखनलाल पता-कांदुल रामानन्द पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 26/3(0.4220), 272/3(0.2940), 284/4 (0.2050) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/क्रेता चन्द्रशेखर पिता/पति-स्व. लखनलाल पता-कांदुल कुमारी बाई पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, गोपाल पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, शांति यदु पिता/पति-स्व. लखनलाल पता-कांदुल, रामानन्द पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, राजेन्द्र पिता/पति-रामगुलाम पता-कांदुल, करुणा यादव पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल, शकुन यद् पति स्व. रामचन्द यदु पिता/पति-गीता यदु, राजकुमार पिता स्व. रामचन्द यदु पता-कांदुल कुमारी विजय यदु पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल, भूमिका गोपाल पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल आशा बाई पिता/पति-स्व. लखन लाल पता-कांदुल, प्रदीप, स्वाती पिता/पति-भरतलाल, खिल्ली बाई पति भरतलाल पता-कांदुल के नाम पर पंजीयन/फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 06/05/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय।

न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 04 रायपुर पर की जावेगी। उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 10/04/2024 को जारी किया जाता है।

अतिरिक्त तहसीलदार: Tulsi Rathore
अतिरिक्त तहसीलदार रायपुर (छ.ग.)
रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 03 मई 2024

मतदान हमारा अधिकार और कर्तव्य भी, प्रत्येक मतदाता मतदान अवश्य करें-संबित मिश्रा

बालको प्रबंधन सहित यहॉं के सभी प्रतिष्ठान मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों में अपना सहयोग दे रहे हैं

कोरबा(विश्व परिवार)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी व स्वीप के जिला नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा ने आज कहा कि मतदान हम सबका अधिकार भी है और कर्तव्य भी, अत: प्रत्येक मतदाता को अपने मताधिकार का उपयोग करते हुए मतदान अनिवार्य रूप से करना चाहिए। उन्होने कहा कि कोई भी मतदाता मतदान से न छूटने पाए, सभी मतदाता मतदान करें, इस दिशा में हम सभी को पूरी निष्ठा के साथ कार्य करना होगा तथा मतदाता जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित करना होगा। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के मार्गदर्शन में संचालित मतदाता जागरूकता अभियान के तहत आज बालको प्रबंधन द्वारा बालको रामलीला मैदान में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का वृहद आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं स्वीप के नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा ने उपस्थित श्रमिकों, बालको के अधिकारी कर्मचारियों व उपस्थित अन्य मतदाताओं से अपील करते हुए कहा कि वे अनिवार्य रूप से अपना मतदान करें, साथ ही अन्य मतदाताओं को भी मतदान हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित करें। आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने इस मौके पर कहा कि बालको प्रबंधन द्वारा अच्छा कार्यक्रम आज आयोजित किया गया है, कडी धूप व गर्मी होने के बावजूद काफी संख्या में श्रमिकबंधुओं व मतदाताओं ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति पूरे जोश व उत्साह के साथ दी है, यह उत्साह मतदान दिवस 07 मई तक यूं ही बना रहना चाहिए। उन्होने कहा कि चूंकि विगत चुनावों में शहरी क्षेत्र में मतदान का प्रतिशत कम देखने को मिला है, अत: हमारा लक्ष्य है कि शहरी क्षेत्र में अधिकाधिक मतदान हों तथा सभी लोग अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करें। उन्होने कहा कि बालको प्रबंधन सहित यहॉं के सभी प्रतिष्ठान मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों में अपना सहयोग दे रहे हैं, जिसके लिए मैं सभी प्रतिष्ठानों को धन्यवाद देती हूँ। बालको के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री राजेश कुमार ने इस मौके पर कहा कि लोकसभा का यह चुनाव लोकतंत्र का महापर्व है, मतदान हमारा अधिकार भी है और जिम्मेदारी भी, हम अपने मत के द्वारा देश की बागडोर संभालने वाले जनप्रतिनिधि चुनते हैं, मजबूत लोकतंत्र के लिए अधिक से अधिक मतदान होना आवश्यक है, अत: हम सभी अपना मताधिकार का उपयोग अवश्य करें।

संक्षिप्त समाचार

मतदाता जागरूकता के लिए चलाया गया हस्ताक्षर अभियान

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन में मतदाता जागरूकता स्वीप कार्यक्रम अंतर्गत चेंबर ऑफकॉमर्स एवं व्यापारी संघ के द्वारा ट्रांसपोर्ट नगर में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। जिसमें कलेक्टर ने सबसे पहले हस्ताक्षर कर अभियान की शुरूआत की तथा मतदान दिवस 7 मई को सभी नागरिकों से मतदान करने आह्वान किया गया। इस कार्यक्रम में जिला पंचायत सीईओ श्री संबित मिश्रा, आयुक्त नगर निगम श्रीमती प्रतिष्ठा ममगाई आदि अधिकारी-कर्मचारी, व्यापारी वर्ग एवं नागरिकगण उपस्थित थे। कलेक्टर श्री वसंत ने हस्ताक्षर अभियान के उपरांत नागरिकों को शत प्रतिशत मतदान हेतु शपथ दिलाई।

किराए के मकान में चल रहा था सेक्स रैकेट

बिलासपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में सेक्स रैकेट का भंडाफोड़ हुआ है. किराए के मकान में जिस्मफरोशी का धंधा धड़ल्ले से चल रहा था. पुलिस ने संचालित सेक्स रैकेट के ठिकानों पर छापेमारी कर सेक्स रैकेट का खुलासा किया है. इस छापेमार कार्रवाई में पुलिस ने दलाल समेत 14 युवती 7 युवक को पकड़ा है. यह मामला सकरी थाना क्षेत्र का है. जानकारी के अनुसार, पुलिस ने सकरी क्षेत्र के अमेरी गोकुलधाम में किराए के मकान में सेक्स रैकेट संचालित किया जा रहा था. मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस की टीम ने मकान में दबिश दी. इस दौरान पुलिस ने दलाल सहित 14 युवती और 7 युवक को हिरासत में लिया है. पुलिस सभी से पूछताछ कर रही है. बताया जा रहा है कि पैकेज में बाहर से युवतियां आई थी. दलाल ग्राहकों को लड़कियां सप्लाई करता था. पुलिस जांच के बाद मामले का खुलासा करेगी.

होम वोटिंग के पहले दिन घर जाकर मतदान दल ने कराई वोटिंग

सूरजपुर(विश्व परिवार)। संसदीय क्षेत्र सरगुजा (01) अंतर्गत आज सूरजपुर जिले में होम वोटिंग की शुरूआत हुई। जिले में दिव्यांग व 85 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों के लिए होम वोटिंग की सुविधा दी गई। जिसमें जिले के तीनों विधानसभा में तय रूट चार्ट के तहत होम वोटिंग के लिए गाड़ी जिला संयुक्त कार्यालय से रवाना हुई। मतदान दल द्वारा निर्धारित घरों में पहुंचकर मतदाताओं से वोटिंग कराई गई, जिससे कोई भी पात्र मतदाता लोकतंत्र के महापर्व में मतदान से वंचित न हो, मतदाताओं द्वारा घर पर ही डाक मतपत्र द्वारा अपने मताधिकार उपयोग किया गया। बुजुर्ग व दिव्यांगजन के अंतर्गत सूरजपुर जिले से 40 मतदाताओं ने होम वोटिंग के लिए आवेदन किया था। जिसमें आज प्राप्त अंतिम जानकारी के अनुसार 37 लोगों द्वारा मताधिकार प्रयोग किया गया। 03 मतदाता अनुपस्थित रहें जिसमें 01 की मृत्यु व अन्य 02 लोग स्वास्थ्य कारणों से जिले से बाहर रहने की सूचना प्राप्त हुई है।

मंडप के नीचे वर-वधु ने ली मतदान की शपथ

रायगढ़(विश्व परिवार),। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कार्तिकेया गोयल के निर्देशन एवं जिला पंचायत सीईओ एवं नोडल अधिकारी स्वीप जितेन्द्र यादव के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन 2024 में जिले में शत-प्रतिशत मतदान करने के लिए स्वीप के तहत विविध कार्यक्रम आयोजित कर नागरिकों को लोकतंत्र में एक-एक वोट के महत्व को बताया जा रहा है। इसी कड़ी में आज विकासखण्ड तमनार के ग्राम-सामारूमा में विवाह के मौके पर मंडप के नीचे वर-वधु ने मतदान की शपथ ली। इस दौरान सीईओ जनपद तमनार वीरेन्द्र राय ने मौके पर नव-दंपत्ति एवं शादी समारोह में शामिल सभी लोगों को 7 मई मंगलवार को शत-प्रतिशत मतदान करने हेतु शपथ दिलाई। उन्होंने मतदान समय की जानकारी देते हुए बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान समय निर्धारित किया गया है। इस समयावधि में आकर सभी अवश्य मतदान करें। इसी क्रम में स्वीप अंतर्गत जनपद पंचायत लैलूंगा में 'जाने अपना बूथ' कार्यक्रम एवं हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया। इस दौरान लोकतंत्र के महापर्व में सभी नागरिकों को शामिल होने का आव्हान किया गया। नागरिकों को देश के लोकतंत्र को और अधिक मजबूत बनाने मतदाताओं को बिना किसी प्रलोभन के अपने मताधिकार का उपयोग करने एवं सभी को अपने परिवार, रिश्तेदार एवं पड़ोसियों को मतदान के लिए प्रेरित करने कहा गया। नागरिकों को बताया गया कि लोकतंत्र में मजबूती का आधार सिर्फ मतदान होता है।

निर्वाचन की निष्पक्षता बनाए रखने में माइक्रो आब्जर्वर की भूमिका महत्वपूर्ण-कलेक्टर

कलेक्टर गोयल ने केंद्रीय विद्यालय में चल रहे माइक्रो आब्जर्वर, मतदान दलों के प्रशिक्षण का किया निरीक्षण

रायगढ(विश्व परिवार)। कलेक्टर कार्तिकेया गोयल आज केंद्रीय विद्यालय में चल रहे माइक्रो आब्जवर्स, मतदान दलों के प्रशिक्षण का निरीक्षण किया। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि निर्वाचन में निष्पक्षता बनाए रखने में आपका कार्य महत्वपूर्ण होगा। सभी अपने मतदान केंद्रों में होने वाले निर्वाचन प्रक्रिया के प्रत्येक क्रियाकलापों पर नजर रखते हुए उनका रिपोर्ट तैयार कर सामान्य प्रेक्षक को प्रदान करेंगे। इस अवसर पर अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी राजीव कुमार पाण्डेय, डिप्टी कलेक्टर महेश शर्मा, डिप्टी कलेक्टर श्री शशिकांत कुर्रे उपस्थित रहे। कलेक्टर श्री गोयल ने सभी माइक्रो आब्जवर्स को प्रशिक्षण में निर्वाचन की प्रत्येक प्रक्रिया से अवगत होने को कहा ताकि निर्वाचन कार्य में किसी प्रकार की दिक्कत न हो। इस दौरान उन्होंने मिक्स मतदान दल एवं संगवारी मतदान केंद्र के दल के प्रशिक्षण कक्ष भी पहुंचे। उन्होंने निर्वाचन प्रक्रिया एवं मतदान दिवस के दिन किए जाने वाले सभी गतिविधियों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मतदान दिवस पर मॉकपोल, सीआरसी, नियत समय पर वास्तविक मतदान प्रारंभ, मतदान समाप्ति घोषणा, क्लोज जैसे प्रत्येक प्रक्रिया को किया जाना अति आवश्यक है। सभी प्रक्रियाओं को सावधानी पूर्वक करेंगे कहीं भी गलती की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि निर्वाचन में समय महत्वपूर्ण होता हैं, नियत समय में मतदान प्रारंभ होने से आपका कार्य आसान होगा। इस दौरान उन्होंने कहा कि मतदान दिवस पर किसी प्रकार की दिक्कत होने पर उनकी सूचना सेक्टर ऑफिसर को देंगे। इसके साथ ही उन्होंने मतदान दिवस पर तकनीकी, व्यवहारिक दिक्कतों से अवगत करते हुए संयम से कार्य करने हेतु निर्देशित किया। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि ग्रीष्म ऋतु के लिहाज से मतदान दलों को मेडिकल किट प्रदान किया जाएगा, साथ ही सभी मतदान दिवस पर पर्याप्त पानी ओआरएस लेते रहें। इसके साथ ही जिला प्रशासन द्वारा मतदान केंद्रों में कूलर की व्यवस्था की जा रही हैं।

वर्दी की आड़ में गांजा तस्करी का प्रयास, एक युवक गिरफ्तार

बिलासपुर(विश्व परिवार)। जीआरपी की एंटी क्राइम टीम ने एक युवक को 10 किलो गांजा के साथ गिरफ्तार किया है। रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर तस्कर फोर्स के यूनिफार्म पहनकर बैठा था, जिसे देखकर जीआरपी ने पूछताछ की, तब वह खुद को मुंबई के स्पेशल टॉस्क फो 'का जवान बताने लगा। उसके बैग की तलाशी लेने पर 10 किलो गांजा बरामद हुआ। युवक के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर रेलवे सुरक्षा बल व जीआरपी के जवान स्टेशन व ट्रेनों में लगातार जांच कर रही है। जांच के दौरान सुरक्षा बल के जवान अवैध हथियार से लेकर शराब व गांजा की तस्करी करने वालों की धरपकड़ कर रहे हैं। इस कड़ी में मंगलवार की रात जवानों ने जोनल स्टेशन की जांच कर रहे थे। तभी प्लेटफार्म नंबर 4-5 पर रायपुर छोर की तरफ एक युवक संदिग्ध परिस्थितियों में बैठा मिला। वह फोर्स का यूनिफार्म पहना था। पूछताछ में उसने खुद को मुंबई के स्पेशल टॉस्क फोर्स का जवान बताने लगा और ट्रेन का इंतजार करने की जानकारी दी। उसने बताया कि उसका नाम कल्पेश पाटिल (26) पिता सुरेश गोरख पाटिल है और मुंबई के धुली में रहता है। उसकी गतिविधियों को देखकर जीआरपी की टीम को भरोसा नहीं हुआ कि वह पुलिस फोर्स में है। तब उसके बैग की तलाशी ली गई। जांच के दौरान उसके बैग से 10 किलो गांजा बरामद हुआ।

99वीं की दहलीज पर संत कुमारी ने होम वोटिंग के माध्यम से मतदान कर लगाया शतक

सूरजपुर(विश्व परिवार)। लोकसभा आम चुनाव 2024 संसदीय क्षेत्र सरगुजा (01) अंतर्गत आज सूरजपुर जिले के तीनों विधानसभा में होम वोटिंग के लिये संयुक्त जिला कार्यालय से मतदान दल रवाना हुआ। जिसके तहत होम वोटिंग की गाड़ी जिले के दुरस्त अंचल बिहारपुर के नजदीक ग्राम पासल भी पहुंची थी। जहां श्रीमती संत कुमारी का परिवार मतदान दल की प्रतीक्षा कर रहा था। 99 वीं वर्षीय श्रीमती संत कुमारी भी पलकें बिछायें होम वोटिंग की गाड़ी का इंतजार कर रही थी। गाड़ी के प्रवेश द्वार पर पहुंचते ही घर वालों ने श्रीमती संत कुमारी को सूचना दी साथ ही मतदान दल का स्वागत किया। 99वीं वर्षीय श्रीमती संत कुमारी ने चेहरे पे मुस्कान लिए मतदान के पूर्व की सभी औपचारिकता पूर्ण की और इसके पश्चात् अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस अवसर पर उपस्थित मतदान दल भी श्रीमती संत कुमारी के साहस व कर्तव्य निष्ठा के भाव को देखकर प्रभावित हुआ। इसी प्रकार बसनारा चांदनी बिहारपुर से श्रीमती सुबासो सिंह (92 वर्ष), प्रेमनगर के नवापारा कला से श्रीमती भुइरी सिंह (95 वर्ष), नोहर साय सिंह टेकाम (95 वर्ष) एवं श्री ठाकुर सिंह (91 वर्ष), प्रेमनगर से श्रीमती कुसराइन मरकाम (90 वर्ष), प्रेमनगर के खजुरी से श्री हीरासाय आंडिल्य (85 वर्ष), इत्यादि होम वोटिंग के माध्यम से अपना मताधिकार का प्रयोग किया।

ग्रामीण क्षेत्रो में स्वीप की गतिविधियां निरंतर जारी

रैली, नारा-लेखन, मेहंदी, रंगोली, पोस्टर निर्माण आदि के माध्यम से मतदाताओं को किया जा रहा जागरूक

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन एवं स्वीप नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा सीईओ मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दौरान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में युवा, महिला, पुरूष सहित स्कूल-कॉलेजों के छात्र-छात्राओं द्वारा लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने हेतु नुक्कड़-नाटक, रैली, नारा-लेखन, निबंध, भाषण, मेहंदी प्रतियोगिता, पोस्टर निर्माण जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में जनपद पंचायत कटघोरा में स्कूली छात्र-छात्राओं, शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित ग्रामीणों ने गांव में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत जागरूकता रैली निकालकर अनिवार्य मतदान का संदेश दिया। ग्राम पंचायत मलगांव, छुरीखुर्द एवं छिंदपुर ग्रामीण महिला-पुरूषों के द्वारा मतदान जागरूकता रैली निकालकर शत-प्रतिशत मतदान के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया। विगत दिवस स्वीप कार्यक्रम अन्तर्गत विकासखंड पोड़ी उपरोड़ा के समस्त पंचायतो मे एनआरएलएम कैडर, ग्रामीण क्षेत्र के आमजन, समस्त सचिव और जनपद पंचायत पोड़ी उपरोड़ा के स्टॉफके द्वारा पोड़ी उपरोड़ा विकास खण्ड स्तरीय मतदाता जन-जागरूकता हेतु दीप प्रज्ज्वलित किया गया। इसके साथ ही 'स्वीप एवं मतदान करें', आदि शब्दों को दीपमाला से सजाया गया। हल्दी और चांवल लेकर घर-घर जाकर मतदान हेतु जनसामान्य को मतदान करने हेतु अपील की गई। गांवों में विभिन्न स्थानों पर रंगोली बना कर शत प्रतिशत मतदान करने का संदेश दिया। जिला आयुर्वेद अधिकारी एवं स्टाफके द्वारा मतदाता जागरूकता के तहत 07 मई को पहले मतदान फिर जलपान का संदेश देकर मतदाताओं का जागरूक किया गया। शासकीय हाईस्कूल लाद में छात्र-छात्राओं के द्वारा मतदाता जागरूकता के लिए रंगोली बनाई गई तथा गांव में रैली निकालकर ग्रामीण मतदाताओं को जागरूक किया गया। मतदाता जागरूकता अभियान के तहत ग्रामीणों को शत-प्रतिशत मतदान करने के लिए गांव में षपथ दिलाई गई कि हम, भारत के नागरिक, लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते है कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाएं रखेंगे तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों मे अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

कटघोरा में स्वीप के तहत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

सभी आमजन लोकतंत्र के महापर्व में दे अपनी सहभागिताः कलेक्टर

छुरी से कटघोरा के बीच अधिकारियों ने निकाली बाइक रैली

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत एवं सीईओ जिला पंचायत व स्वीप नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा के निर्देशन में कटघोरा विकासखण्ड के छुरीकला में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत बाइक रैली का आयोजन किया गया। रैली में एसडीएम कटघोरा श्री सरोज महिलांगे, तहसीलदार, जनपद सीईओ, सहित विभिन्न विभागों के खंड व पंचायत स्तरीय अधिकारी कर्मचारी हेलमेट पहनकर बाइक रैली में शामिल हुए एवं मतदाता जागरूकता का संदेश दिया। यह बाइक रैली मतदाता जागरूकता संदेश युक्त बैनर, पोस्टर, फ्लेक्स के साथ छुरीकला (बस स्टैंड) से प्रारंभ होकर सलोरा क, जेन्जरा चैक से होते हुए हुंकरा व मुख्य मार्ग से होते हुए कटघोरा स्थित स्वामी आत्मानन्द स्कूल में समाप्त हुई। कलेक्टर श्री वसंत ने कटघोरा के स्वामी आत्मानंद विद्यालय में बाइक रैली को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आमजनों के बीच मतदान की जागरूकता के लिए यह बाइक रैली आयोजित की गई है। मजबूत लोकतंत्र के निर्माण में सभी की सहभागिता आवश्यक है। लोकतंत्र के इस महापर्व में आप सभी अपनी भूमिका निभाइए, आपका वोट बहुमूल्य है, इस हेतु आप सभी धर्म, वर्ग, जाति, किसी प्रकार भय या प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना मतदान करें। कलेक्टर ने आमजनों को मतदान की महत्ता की जानकारी देते हुए शत प्रतिशत मतदान करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही अपने आस पास के लोगों को भी अनिवार्य रूप से मतदान करने हेतु प्रोत्साहित करने की बात कही।

किसान की कुल्हाड़ी से मारकर हत्या

बिलासपुर(विश्व परिवार)। जिले के ग्राम सेलर में एक किसान पर कुल्हाड़ी से हमला कर उसकी हत्या कर दी गई है। किसान मंगलवार की शाम अपनी खेत की फसल देखने गया था जो घर नहीं लौटा। और जब परिजन उसकी तलाश पर खेत पहुंचे तो वहां उसकी लाश खून से लथपथ पड़ी मिली। घटना सीपत थाना क्षेत्र की है। मिली जानकारी के अनुसार ग्राम सेलर निवासी कुशल प्रसाद साहू (65) पिता भगतराम साहू खेती किसानी करता था। वह अपनी खेत में बोर कराकर डबल फसल उगा रहा है। मंगलवार की शाम वह अपनी खेत में फसल देखने गया था, जिसके बाद वह रात तक घर नहीं लौटा। इस पर खाना खाने के समय उसके परिजन उसकी तलाश करते हुए खेत गए। जहां पंप हाउस के पास खेत में उसकी खून से लथपथ लाश पड़ी मिली। परिजन ने गांव वालों के साथ ही पुलिस को हत्या की जानकारी दी। हत्या की खबर मिलते ही पुलिस गांव पहुंच गई। खून से लथपथ शव को देखने के बाद पता चला कि किसान पर कुल्हाड़ी व धारदार हथियार से हमला किया गया है। पुलिस परिजन और ग्रामीणों से पूछताछ कर हत्यारे की जानकारी जुटा रही है। प्रारंभिक जांच व पूछताछ में जमीन विवाद के चलते कुशल की हत्या करने की बात सामने आई है। पुछताछ में यह भी पता चला कि मृतक का उसके एक बेटे दीपक साहू के साथ भी जमीन को लेकर अनबन है। जिसके चलते पुलिस दीपक साहू को भी संदेही मानकर जांच कर रही है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 03 मई 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

जमानत एक नियम, जेल एक अपवाद है...

पंतजलि आयुर्वेद को फटकार

भ्रामक विज्ञापनों की सुनवाई का दायरा बढ़ाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने पंतजलि आयुर्वेद को कड़ी फटकार लगाई। अपनी दवाओं के लिए भ्रामक दावों को लेकर अदालत की अवमानना करने पर सुनवाई चल रही है। अदालत ने आदेश जारी किया कि वह बड़े साइज में माफीनामे का विज्ञापन जारी करें। रामदेव के वकील मुकुल रोहतगी ने अदालत को बताया कि माफीनामा 67 अखबारों में दिया गया है। इस पर अदालत ने जानना चाहा कि क्या यह पिछले विज्ञापनों के आकार का था। रोहतगी के इस पर केवल दस लाख रुपये खर्च करने पर कोर्ट ने नाराजगी व्यक्त की। साथ ही, यह भी कहा कि हमें पंतजलि के खिलाफ ऐसी याचिका दायर करने के लिए आईएमए पर एक हजार करोड़ रुपये का जुर्माना लगाने की मांग की गई है जिस पर अदालत ने प्रॉक्सी याचिका होने का संदेह व्यक्त किया। केंद्र को इस पर जागना चाहिए कहते हुए देश की सबसे बड़ी अदालत ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को भी लताड़ लगाई। पंतजलि आयुर्वेद के उत्पादों और उनके चिकित्सकीय प्रभावों के विज्ञापनों से संबंधित अवमानना कार्रवाई के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने रामदेव और बालकृष्ण को अपने समक्ष पेश होने का आदेश दिया था। यह सुनवाई इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की याचिका पर जारी है। पंतजलि योगपीठ को भी अब सेवा शुल्क का भुगतान करना होगा, जुर्माना और ब्याज के रूप में उसे साढ़े चार करोड़ रुपये भी अदा करने हैं। विभिन्न रिपोर्ट्स के अनुसार रामदेव की नेटवर्थ चौदह सौ करोड़ रुपये से ज्यादा की है। पंतजलि का कुल रेवन्यू तीस हजार करोड़ रुपये से अधिक का हो चुका है। निस्संदेह उन्होंने आयुर्वेद और योग को पुनः प्रचारित करने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसके अलावा, योग और आयुर्वेदिक चिकित्सा के प्रति आमजन में ललक पैदा करने में भी उन्होंने महती भूमिका निभाई है। मगर इसके लिए भ्रम फैलाने या भ्रामक विज्ञापनों के जरिए जनता को बरगलाने की उन्हें छूट तो नहीं ही मिल सकती। मंत्रालय को भी इसके लिए दोषी माना जाना जरूरी है। बात यहां अकेले पंतजलि की नहीं है, बल्कि कोई भी कंपनी अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए यदि इस तरह का भ्रम फैलाने की कोशिश करती है तो उस पर भी कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। साथ ही, भविष्य में भी इस तरह की हरकत करने पर भारी जुर्माना जड़ा जाना चाहिए। मरीजों और उपभोक्ताओं के अधिकारों को लेकर जिस तरह की लापरवाही अपने यहां जारी है।

राजेंद्र मोहन शर्मा

न्यायालय को भी मुकद्दमों का ट्रायल निश्चित समय सीमा में निटपाने के लिए जिम्मेदार ठहराने की जरूरत है संविधान की धारा 21 के अंतर्गत व्यक्तिगत जीवन व स्वतंत्रता का विशेष मौलिक अधिकार है, जो कि अपातकाल में भी समाप्त नहीं किया जा सकता। इसी तरह न्यायशात्र का भी यही सिद्धांत है कि जब तक किसी दोषी को सजा न हो जाए, तब तक उसे निर्दोष ही समझा जाना चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता (अब नागरिक सुरक्षा संहिता) में दोषियों को जमानत दिए या न दिए जाने का प्रावधान रखा गया है। न्यायालय जमानत देते समय उसके कानून व व्यवस्था पर पडने वाले प्रभावों का पूर्ण अवलोकन करता है। यह बात ठीक है कि जमानत देना या न देना किसी न्यायाधीश के व्यक्तिगत विवेक पर भी निर्भर करता है। आखिर जमानत क्या है? किसी भी अपराधी को गिरफ्तारी से बचने के लिए न्यायालय के सामने कोई निश्चित धन राशि या सम्पत्ति जमा करवाने या फिर अमुक धन राशि को न्यायालय के दिशा निर्देशों की अवहेलना न करने के लिए एक ऐसा बांड/प्रतिज्ञा पत्र होता है जो अपराधी व उसकी जमानत देने वाले को लिख कर देना होता है तथा दी गई शर्तों के अनुसार उसे अपना व्यवहार सुनिश्चित करना होता है। सात वर्ष तक की सजा वाले अपराधों में पुलिस को ही जमानत लेने का अधिकार दे दिया गया है, मगर इसमें भी अपवाद की अवधारणा डाली गई है कि यदि पुलिस को लगे कि अपराधी फरार हो सकता है या फिर सहयोग नहीं करेगा, तो इन हलात में पुलिस अपने स्तर पर जमानत नहीं लेगी तथा न्यायालय द्वारा ही जमानत दी जा सकती है। इस विवेक का पुलिस भी कई बार अनुचित लाभ उठा कर न्याय के साथ भद्दा मजाक करती रहती है। गंभीर प्रकार के अपराधों को गैर-जमानती बनाया गया है तथा आम तौर पर ऐसे अपराधों में जमानत नहीं दी जाती तथा दोषी अपने केस के ट्रायल के अंतिम निर्णय तक जेल के अंदर ही रहता है। इसी तरह यदि पुलिस किसी गैर जमानती

मुकद्दमे का 90 दिन में अन्वेषण पूर्ण करके चालान नहीं भेज देती तब संबंधित अपराधी को न्यायालय जमानत पर छोड़ सकता है। इसी तरह जब कोई व्यक्ति अपनी गिरफ्तारी की आशंका से ग्रसित होता है, तो वह सत्र न्यायालय या फिर उच्च न्यायालयों में जमानत की मांग कर सकता है। मगर जमानत देना या न देना न्यायाधीश के व्यक्तिगत/विवेक पर भी निर्भर करता है। यदि मामला गंभीर प्रवृत्ति का हो तो आम तौर पर अग्रिम जमानत नहीं दी जाती। गौरतलब है कि भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता के अंतर्गत विचाराधीन मुकद्दमों की सुनवाई की कोई सीमा निश्चित नहीं की गई है, तथा परिणामस्वरूप विचाराधीन अपराधी कई बार बिना वजह से लंबे समय तक जेलों में अपने जीवन की अंतिम सांसें गिनते रहते हैं। पाया गया है कि वर्ष 2021-22 में भारत की जेलों में केवल 33 प्रतिशत कैदी ही ऐसे थे जिन्हें किसी अपराध में दोषी करार दिया गया था, जबकि 77 प्रतिशत कैदी ऐसे थे जो बिना सजा के ही जेलों में सड़ रहे थे। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में 11490 ऐसे विचाराधीन अपराधियों को जेलों में रखा गया था, जो पिछले पांच वर्षों से भी अधिक समय तक न्याय का इंतजार कर रहे थे। इसी तरह वर्ष 2022 में कुल 573220 दोषी विभिन्न जेलों में थे जिनमें से 434302 विचाराधीन कैदी ही थे। यह भी देखा गया है कि जिन कैदियों को सत्र न्यायाधीश से जमानत नहीं मिलती, वे उच्च या उच्चतम न्यायालय में गुहार लगा कर जमानत प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं, जिससे स्पष्ट है कि न्यायाधीश का व्यक्तिगत विवेक भी किसी की जमानत को निर्धारित करता है। दोषियों को न्यायिक हिरासत में भेजने के लिए पुलिस जांच एजेंसियां केवल यही गुहार लगाती हैं कि दोषी अपने पद का दुरुपयोग कर सकता है, गवाहों को डरा- धमका सकता है या फिर कई प्रकार के प्रलोभनों द्वारा आकर्षित कर सकता है। यहां पर सोचने की बात यह है कि क्या ट्रायल के समय दोषी के सगे संबंधी गवाहों को प्रभावित नहीं कर सकते? हां, वो ऐसा आराम से करते ही हैं तथा यही कारण है कि गवाहों के मुकर जाने से ही दोषी सजामुक्त हो जाते हैं। जमानत न देने से किसी कैदी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि उसे अपराधी तो एक ट्रायल के बाद ही ठहराया जा सकता है। अगर हम आर्थिक अपराधों में सजा की दर की बात करें तो यह केवल 32.6 प्रतिशत है। आखिर क्या कारण है कि ऐसे अपराध जो कि दस्तावेजों के साक्ष्यों पर आधारित होते हैं, उनमें भी अधिकतर दोषी सजा से मुक्त हो जाते हैं। पुलिस व न्यायालय दोषियों की जमानत रद्द करने-करवाने में ही लगे रहते हैं तथा पूरी न्यायिक प्रक्रिया को मजबूत करने की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। जमानत के समय तथ्यों की कोई विस्तृत पड़ताल करने की आवश्यकता नहीं होती। इस संबंध में उच्चतम न्यायालय ने संजय चंद्र बनाम सीबीआई (2012) वाले केस में कहा था कि जमानत का उद्देश्य न ही सजा देने का है और न ही कोई अपराध की रोकथाम करना है। यह तो केवल मुलजिम को पुलिस या न्यायालय में पूछताछ में शामिल होने के लिए केवल एक प्रतिज्ञापत्र है। एक समय था जब उच्चतम न्यायालय जमानत के संबंध में बहुत ही उदार था तथा जेल भेजने की बजाय बेल पर विश्वास किया जाता था। हां, ऐसे अपराध जिनका सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता हो, के अतिरिक्त अन्य मामलों में जमानत हो ही जानी चाहिए। यह भी देखा गया है कि एक ही जैसे अपराध को यदि सामान्य व्यक्ति या फिर विशेष व्यक्ति द्वारा किया गया हो तो विशेष व्यक्ति को जमानत नहीं दी जाती है, तथा यह कानून की नजरों में तो भेदभाव वाली ही बात है। आर्थिक अपराधों में कुछ विशेष परिस्थितियों के अतिरिक्त जमानत दिए जाने का प्रावधान उदार ही होना चाहिए, क्योंकि ऐसे मुकद्दमों में तथ्य दस्तावेजों पर ही आधारित होते हैं तथा यदि फिर भी दोषी किसी प्रकार का हस्तक्षेप करता है, तब जांच एजेंसी उसकी जमानत रद करवा सकती है। वास्तव में न्यायालय को भी मुकद्दमों का ट्रायल एक निश्चित समय सीमा के भीतर निटपाने के लिए जिम्मेदार ठहराने की जरूरत है, जो कि अब नए कानून, नागरिक सुरक्षा संहिता के अंतर्गत ऐसा प्रावधान किया भी गया है। पुलिस व अभियोजन पक्ष को लकीर का फकीर न बन कर किसी दोषी की जमानत रद्द करवाने के लिए वो ही घिसी-पिटी बातें लिख कर कि जमानत हो जाने पर गवाहों का डराया-धमकाया व प्रलोभित किया जा सकता है या फिर अपराधी भगौड़ा हो सकता है, इन सब बातों से ऊपर उठकर एक मानवीय व उदारवादी रुख अपनाना चाहिए। जमानत की राशि को तर्कसंगत आधार पर बढ़ाया जा सकता है।

विचार

गंभीर कदम उठाने होंगे

सुशील देव

कई वजहों हमारा पर्यावरण और वातावरण दूषित हो रहा है, जिसके हम किस्तों में शिकार बन रहे हैं। मिलावटी खाद्य पदाथरे के कारण हम पहले से ही कई बीमारियों की जद में हैं, लगातार प्रदूषण के कारण हमारी सांसें उखड़ रही हैं तो आए दिन जलवायु परिवर्तन की वजहों से हमें अकल्पनीय विपत्तियों के दौर से गुजरना पड़ रहा है। उस पर घातक व मारक माइक्रो प्लास्टिक ने हमें चिंता में डाल दिया है। प्लास्टिक के कण जाने-अनजाने में हमारी आंखों से होते हुए शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों तक पहुंच रहे हैं, जो हमारे दिमाग पर भी असर डालने लगा है। दिमाग तक असर डालने का मतलब मानव जाति के लिए प्लास्टिक के छोटे-छोटे कण खतरनाक संदेश दे रहे हैं। इसलिए हमें इस खतरे को देखते हुए पहले ही चेत जाना चाहिए। द यूनिर्वसटिी ऑफ न्यू मैक्सिको एंड हेल्थ साइंसेज से जुड़े वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में यह दावा किया है कि माइक्रो प्लास्टिक ने हमें गहरे तौर पर अपने शिकंजे में ले लिया है, इससे छुटकारा पाने के लिए गंभीर कदम उठाने होंगे, वरना स्थिति बहुत भयावह होने वाली है। अध्ययन के मुताबिक प्लास्टिक प्रदूषण के महीन कण भोजन, पानी और हवा में घुल चुके हैं जो न केवल हमारे पाचन तंत्र को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे आंतों से होते हुए शरीर के अन्य अहम अंगों जैसे गुर्दा, लीवर और मस्तिष्क तक पहुंच रहे हैं। दूसरा अध्ययन यह भी बताता है कि माइक्रो प्लास्टिक समुद्री जानवर और पौधों में भी पाए गए हैं। इतना ही नहीं, हम जिस बोतल बंद पानी को शान से शुद्धता की दुहाई देकर पीते हैं उनमें भी माइक्रो प्लास्टिक के अंश मिल रहे हैं। यह बेहद महीन कण होते हैं जिसे हम नंगी आंखों से नहीं देख सकते, जो अत्यंत जहरीले और केमिकल की शक्ल में होते हैं। आज प्लास्टिक किसी न किसी रूप में घर-घर में घुस चुका है जिससे छुटकारा पाना बेहद कठिन प्रतीत होता है। प्लास्टिक कप, थर्मोकोल, सजावट के समान, प्लास्टिक स्ट्रॉ, पैकेजिंग फिल्म, पीवीसी बैनर, गुब्बारे लगाने वाली प्लास्टिक की डांडिया, प्लास्टिक बैग, झंडा, टॉफी कैंडी के स्टिक, प्लास्टिक के बर्तन, शादी कार्ड, मिठाई के डब्बे, दवा की की बोतलें, बाल्टी आदि से लेकर सैकड़ों घरेलू वस्तुएं जो हमारे दैनिक जीवन व्यवहार में हैं, उनसे छुटकारा पाना बेहद कठिन प्रतीत होता है। हालांकि सरकार और कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं की पहल से सिंगल यूज प्लास्टिक के विकल्प समय-समय पर सुझाए गए हैं। कई योजनाओं पर काम भी चल रहे हैं। मगर इसके खतरनाक परिणाम को लोग अभी भी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। मोटा-मोटी जूट बैग, प्लैटिनम, सिलिकॉन, स्टेनलेस स्टील, कांच, मिट्टी के बर्तन या चीनी मिट्टी के उत्पादों का इस्तेमाल करके हम इस खतरे से थोड़ा बच सकते हैं। प्लास्टिक पर्यावरण वन्य जीवन और आमजन के लिए सबसे बड़ा खतरा है। यह प्रदूषण के स्तर को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार है और इससे निकलने वाले जहरीले रसायन भूजल को प्रदूषित कर रहे हैं, जिससे घातक जानलेवा बीमारियां हो रही हैं। वैज्ञानिकों ने माइक्रो प्लास्टिक की मात्रा की पहचान करने के लिए चूहों पर अध्ययन किया जिसमें पाया कि चूहे तो सिर्फ चार सप्ताह के लिए माइक्रो प्लास्टिक के संपर्क में आए थे तब उनमें कई तरह की खतरनाक बदलाव देखे गए। शोधकर्ताओं ने इंसानी शरीर में जमा होते माइक्रो प्लास्टिक को लेकर गहरी चिंता जताई है क्योंकि धीरे-धीरे हमारे शरीर के अंगों से होते हुए अब यह इंसानी मस्तिष्क को प्रभावित करने लगा है। सरकार इस समस्या के निदान के लिए कार्य तो कर रही है, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाई जो चिंताजनक है। गौरतलब है कि पूरे देश में एक जुलाई 2022 को सिंगल यूज प्लास्टिक के 20 आइटमों को प्रतिबंधित किया गया था। दिल्ली में इन आइटमों पर प्रतिबंध के बावजूद रोक अब तक प्रभावी नहीं दिखी है। अब दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण कमेटी यानी डीपीसीसी ने इसके लिए एसओपी तैयार कर ली है। दिल्ली में लंबे वक्त से सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक लगी हुई है। बार-बार अभियान चलाए जाने के बावजूद ये रोक असरदार साबित नहीं हुई है। बड़ी बात यह है कि इनका उत्पादन और बिक्री बंद नहीं हुई है। दिन-ब-दिन प्लास्टिक हमारे ईको-सिस्टम को बर्बाद कर रहा है। इसका संयुक्त भार प्रतिवर्ष करीब 300 मिलियन टन है जो जलमागरे और समुद्रों को अवरुद्ध कर रहा है, सड़कों को जाम कर रहा है, वन्यजीवों को नुकसान पहुंचा रहा है और हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहा है। भविष्य की भयावह स्थिति से निपटने के लिए राज्य और केंद्र सरकार को और चुस्त होने की आवश्यकता है। उन्हें जागरूकता के लिए कई स्तरों पर काम करना चाहिए। यदि स्कूली पाठ्यक्रम में बच्चों को शुरू से ही प्लास्टिक के दुर्गुणों के बारे में बताया जाए।

शेषन ने बदली थी अराजक चुनावों की तस्वीर

योगेंद्र योगी

साल 1992 के शुरू से ही शेषन ने सरकारी अफसरों को उनकी गलतियों के लिए लताड़ना शुरू कर दिया था। उसमें केंद्र के सचिव और राज्यों के मुख्य सचिव भी शामिल थे। बीते दशकों में टीएन शेषन से ज्यादा नाम शायद ही किसी नौकरशाह ने कमाया हो देश की मौजूदा पीढ़ी को शायद इस बात का अंदाजा भी नहीं होगा कि भारत की आजादी के बाद की ऊबड-खाबड़ यात्रा में देश ने ऐसे-ऐसे हिचकोले खाए कि लगने लगा था कि लोकतंत्र पटरी से उतर कर अराजकता में बदल जाएगा। इसी यात्रा में सबसे बड़ी चुनौती थी, देश के निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराना। आज जिस तरह शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव सम्पन्न कराए जा रहे हैं, करीब साढ़े तीन दशक पहले इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। उस दौर में ऐसा कोई भी चुनाव नहीं रहा जो खून-खराबे से भरा नहीं रहा हो। देश में बैलट पर बुलेट भारी था। बंदूक की नोक पर वोटों की पेटियों को लूटना आम बात थी। भारत की चुनावी प्रक्रिया में हर तरह की बुराई थी। ऐसे में देश को एक ऐसा मुख्य चुनाव आयुक्त मिलता है, जो पूरी चुनाव व्यवस्था को बदलकर रख देता है। बड़े-बड़े दिग्गज नेताओं को नकेल कस देता है। उस मुख्य चुनाव आयुक्त का नाम है टीएन शेषन। आज अगर देश में निष्पक्ष और स्वतंत्र माहौल में चुनाव हो पाता है तो इसका श्रेय टीएन शेषन को जाता है। देश के दबंग चुनाव आयुक्त के तौर पर अपनी पहचान बनाने वाले शेषन नौकरशाही में भी सुधार के जनक थे। ईमानदारी और कानून के प्रति अपनी निष्ठा की वजह से वह बहुतों को खटकते भी थे। इस वजह से उनके विरोधी उनको सनकी और तानाशाह तक भी कहते थे। लेकिन वह व्यवस्था में क्रांति लाने वाले इनसान, मेहनती, सक्षम प्रशासक, योग्य नौकरशाह, बुद्धीजीवियों और मध्य वर्ग के नायक थे। पलक्कड़ (केरल) के निवासी शेषन ने 1955 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में ट्रेनी के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की। शेषन ने अपनी पहली तैनाती में ही तीखे तेवर दिखाते हुए तमिलनाडु के मदुरई जिले के डिंडीगुल में सब कलेक्टर पद पर रहते हुए हरिजन समुदाय के एक व्यक्ति पर फंड के घपले का आरोप में गिरफ्तार करवा दिया। मंत्री के दवाब के बाद भी आरोपी को नहीं छोड़ा। चेन्नई में यातायात आयुक्त पद के दौरान एक बार एक ड्राइवर ने शेषन से पूछा कि अगर आप बस के इंजन को नहीं समझते और ये नहीं जानते कि बस को ड्राइव कैसे किया जाता है, तो आप ड्राइवरों की समस्याओं को कैसे समझ पाएंगे। शेषन ने इसको एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने न सिर्फबस की ड्राइविंग सीखी बल्कि बस वर्कशॉप में भी काफी समय बिताया। एक बार उन्होंने बीच सडक़ पर ड्राइवर को रोक कर स्टेयरिंग संभाल लिया और यात्रियों से भरी बस को 80 किलोमीटर तक चलाया। शेषन का तमिलनाडु के मुख्यमंत्री से काफी झगड़ा हो गया, जिसके बाद वे प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली आ गए और तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के एक सदस्य के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के आग्रह पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के सचिव बन गए। सचिव के तौर पर उन्होंने टिहरी बांध और सरदार सरोवर बांध जैसी परियोजनाओं का विरोध किया। भले ही सरकार ने उनके विरोध को दरकिनार कर दिया और परियोजना पर काम को आगे बढ़ाया, लेकिन बांध के पर्यावरण पर पडने वाले प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया गया। इसके साथ ही शेषन ने विभागों में नहीं कहने का रुझान शुरू किया। इस दौरान राजीव गांधी से उनकी नजदीकी बढ़ी। वहां से उनको आंतरिक सुरक्षा का सचिव बनाया गया। करीब 10 महीनों बाद उनको कैबिनेट सचिव बनाया गया। जब राजीव गांधी दिसंबर 1989 में चुनाव हार गए और प्रधानमंत्री नहीं रहे तो शेषन का ट्रांसफर योजना आयोग में कर दिया गया। शेषन के मुख्य चुनाव आयुक्त बनने की दास्तां भी कम दिलचस्प नहीं है। दिसंबर 1990 में केंद्रीय वाणिज्य मंत्री और शेषन के दोस्त सुब्रमण्यम स्वामी ने प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के दूत के तौर शेषन पर मुख्य चुनाव आयुक्त के पद की पेशकश की। शेषन इस प्रस्ताव से बहुत अधिक उत्साहित नहीं हुए थे, क्योंकि पहले ही कैबिनेट सचिव विनोद पांडे ने भी उन्हें ये प्रस्ताव दिया था। शेषन इस प्रस्ताव पर राजीव गांधी से मिले। राजीव गांधी ने शेषन को मुख्य चुनाव आयुक्त का पद स्वीकार करने के लिए अपनी सहमति दे दी। लेकिन वो इससे बहुत खुश नहीं थे। उन्होंने उन्हें छेड़ते हुए कहा कि वो दाढ़ी वाला शख्स (चंद्रशेखर) उस दिन को कोसेगा, जिस दिन उसने तुम्हें मुख्य चुनाव आयुक्त बनाने का फैसला किया था। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने साठ के दशक में तमिलनाडु में शेख को नजरबंद करवा दिया था। शेषन उस समय मदुरै जिले के कलेक्टर थे। उनको जिम्मेदारी दी गई थी कि वो शेख द्वारा बाहर भेजे गए हर पत्र को पढ़ें। शेख ने डॉक्टर एस. राधाकृष्णन प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया के नाम पत्र लिखा। शेषन ने बिना डरे पत्र पढ़ लिया। शेख ने घोषणा की कि वो उनके साथ किए जा रहे खराब व्यवहार के विरोध में आमरण अनशन पर जाएंगे। शेषन ने कहा कि सर ये मेरा कर्त्तव्य है कि मैं आपकी हर जरूरत का ख्याल रखूं, मैं ये सुनिश्चित करूंगा कि कोई आपके सामने पानी का एक गिलास भी लेकर न आए। शहरी विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव के धर्मराजन त्रिपुरा में हो रहे चुनावों का पर्यवेक्षक का कार्य छोड़ कर थाइलैंड चले गए। इस पर दंडित करते हुए शेषन ने उनकी गोपनीय रिपोर्ट में विपरीत प्रविष्टि करने का फैसला किया। शेषन ने वर्ष 1993 में 17 पेज का आदेश जारी किया कि जब तक सरकार चुनाव आयोग की शक्तियों को मान्यता नही देती, तब तक देश में कोई भी चुनाव नहीं कराया जाएगा। आखिरकार सरकार को उनके सामने झुकना पड़ा। मौजूदा आदर्श आचार संहिता उसी आदेश का परिणाम है। शेषन के आने से पहले मुख्य चुनाव आयुक्त एक आज्ञाकारी नौकरशाह होता था जो वही करता था जो उस समय की सरकार चाहती थी। ये शेषन का ही बूता था कि उन्होंने चुनाव में पहचान पत्र का इस्तेमाल आवश्यक कर दिया।

अंग्रेज़ गए ! अंग्रेजी कब ?

के. विक्रम राव Twitter ID:@Kvikramrao

आज विश्व अंग्रेजी दिवस है। संयुक्त राष्ट्र संघ के कैलेंडर के अनुसार। इस साम्राज्यवादी भाषा से लाभ कितने हुए ? इस पर तो गत सदियों में ग्रंथ असंख्य लिखे गए। मगर भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्र का विकास कितना हुआ ? इस पर बहस तो अनंत होंगी। बार-बार होंगी। मैं इस पैमाने, इस मापदंड को कुछ अलग तरीके से देखना चाहूंगा। सोवियत रूस, फ्रांस, जर्मनी, और वैसे ही अन्य राष्ट्र जिनका साबका इस ब्रिटिश माध्यम से नहीं पड़ा, उन सबने अपनी राष्ट्रभाषा के बलबूते चहुमुखी तरक्की कर ली थी। मेरा आग्रह है कि स्वभाषा को उतकुंठित कर देने से क्या हानि हुई। मेरी मान्यता है कि राममनोहर लोहिया के अंग्रेजी हटाओ संघर्ष ने देश के विकास के दबे, कुचले और कमजोर वर्गों को लाभ पहुंचाया। वर्ना इस्लामिक मुल्कों की भांति भारत भी आर्थिक और औद्योगिक विकास में पिछड़ा ही रहा। एक बार लोकसभा में डॉ. लोहिया ने कहा था : अंग्रेजी को खत्म कर दिया जाए। मैं चाहता हूं कि अंग्रेजी का सार्वजनिक प्रयोग बंद हो, लोकभाषा के बिना लोकराज्य असंभव है। कुछ भी हो अंग्रेजी हटनी ही चाहिये, उसकी जगह कौन सी भाषाएं आती है, यह प्रश्न नहीं है। इस वक्त खाली यह सवाल है, अंग्रजी खत्म हो और उसकी जगह देश की दूसरी भाषाएं आएं। हिन्दी और किसी भाषा के साथ आपके मन में जो आए सो करें, लेकिन अंग्रेजी तो हटना ही चाहिए और वह भी जल्दी। अंग्रेज गये तो अंग्रेजी चली जानी चाहिये। इसी परिवेश में याद कर लें कि भारत में 1950 में ही जब भारतीय संविधान लागू हुआ तब यह व्यवस्था दी गई थी कि 1965 तक सुविधा के हिसाब से अंग्रेजी का इस्तेमाल किया जा

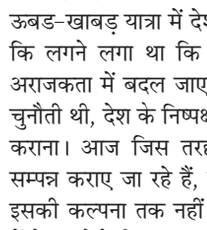

भारत में "अंग्रेजी हटाओ" आंदोलन

डॉ. राममनोहर लोहिया

सकता है, लेकिन उसके बाद हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया जाएगा। इससे पहले कि संवैधानिक समय सीमा पूरी होती, डॉ राममनोहर लोहिया ने 1957 में अंग्रेजी हटाओ मुहिम को सक्रिय आंदोलन में बदल दिया। वे पूरे भारत में इस आंदोलन का प्रचार करने लगे। मैं स्वयं लखनऊ विश्वविद्यालय में चले अंग्रेजी हटाओ अभियान के हरावल दस्ते में रहा। अत: मैं पुख्ता दावा कर सकता हूं। इसका मजबूत प्रमाण है। जो लोग अंग्रेजी में कमजोर रहे, विरोध करते रहे। कई मायने में स्वार्थी कारणों से। मेरे सक्रिय विरोध का आधार सशक्त है। इसीलिए हितों का टकराव होता रहा। कुछ निजी तथ्य सर्वप्रथम पेश कर दूं। मेरी मातृभाषा तेलुगु है। संस्कृत का पठन-पाठन किया। स्वेच्छा से। स्नातक कक्षा में अंग्रेजी मुख्य विषय था। दो वर्षों का अध्ययन था। इस तथ्य के उल्लेख का खास कारण है। इस मुद्दे पर मेरी तकरार तत्कालीन कुलपति और संस्कृत के ज्ञाता प्रो. के. ए. सुब्रमण्यम अय्यर से हुई थी। बीए की डिग्री हेतु अनिवार्य विषय जनरल इंग्लिश में उत्तीर्ण होना जरूरी था। मैं प्रथम वर्ष परीक्षा में नहीं बैठा। मेरा तर्क था कि जब मैंने अंग्रेजी को दो-वर्षीय मुख्य भाषा मानी और पढ़ी, तो फिर जनरल इंग्लिश में क्यों उत्तीर्ण होना चाहिए ? दादा उम्र में बड़ा है अथवा पोता ? मेरा तर्क था कि समाजशास्त्र, संस्कृत, समाज कार्य, राजनीति शास्त्र को मैंने एक वर्ष ही पढ़ा था। कुलपति से मैंने तर्क किया था कि दो वर्षों में अंग्रेजी पढ़कर इतना तो निपुण हो ही गया कि जनरल इंग्लिश से कहीं ज्यादा जान लिया। मगर विश्वविद्यालय का नियम था कि डिग्री पाने हेतु सालभर का कोर्स (जनरल इंग्लिश) पढ़ना आवश्यक है, भले ही दोनों वर्षों में पढ़ी इंग्लिश अधिक ज्ञानदायिनी थी। उन्होंने नहीं माना। विवश होकर मैं दूसरे वर्ष जनरल इंग्लिश परीक्षा में बैठा और फिर अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण हुआ। फिर मैंने सवाल उठाया था कि अंग्रेजी का ज्ञान मेरा दो साल में इतना हो गया था कि सालभर जनरल इंग्लिश का ज्ञान अनावश्यक ही रहा। उसी वर्ष हम लोगों ने लखनऊ विश्वविद्यालय में (10 मई 1957) अंग्रेजी हटाओ का संघर्ष चलाया। चूंकि मैंने अंग्रेजी पूरी पढ़ी थी, अत: मेरा तर्क स्वीकार करना पड़ा। लेकिन तब तक हजारों छात्रों के फेल होने के कारण डिग्री साल भर बाद मिली। फिलहाल छात्रों को एक अरसे तक प्रतीक्षा करनी पड़ी जब जनरल इंग्लिश भी अनिवार्य नहीं रही। यूरी गागरिन पहला मानव था जो अंतरिक्ष में गया था। वह रूसी था। अंग्रेजी में शून्य। अंग्रेजी बोलने वाला आर्मस्ट्रांग (अमेरिका) कई वर्षों बाद चांद पर गया। अत: अंग्रेजी को विकास का पैमाना बनाना कमजोरों पर आधारित होगा। मेरा प्रश्न सीधा है। जब अंग्रेजी नहीं थी तब भी भारत में औषधि, विज्ञान, में आविष्कार होते रहे। इसे कौन नजरअंदाज कर सकता है। अंग्रेजी बोलनेवाले विकास के किस स्तर पर थे ? भारत ने बनाया था आर्यभट्ट तब गोरे लोग पेड़ों पर वास करते थे। कच्चा मांस खाते थे। याद कर लें जब ढाका की महीन रेशम बनी थी तो ये असभ्य गोरे वल्कल वस्त्र धारण करते थे। लौटे इस विदेशी भाषा पर। भारत की विकास गति पिछड़ गई, इन साम्राज्यवादियों के कारण। हिंदी भूभाग के संदर्भ में दक्षिणभाषी भाषाओं का संदर्भ देखें। तेलुगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम के साथ भारत की कई भाषायें हिंदी से कहीं ज्यादा आगे हैं। क्यों अपनी भाषा छोड़ें ? जब वाल्मीकि रामायण रच रहे थे तो इन भारतीय भाषाओं में भी रामकथा लोकप्रिय हो गई थी। उन भाषाओं की उपेक्षा क्यों ? हिंदी के पक्ष में सबसे बड़ी और अनुपम बात यह है कि वह सरलतम है। आम बोलचाल की जुबां है। जनभाषा है। भारत को स्वीकार करनी चाहिए। और अंत में एक ही मेरा तर्क है अंग्रेजी से मेरा विरोध बड़ा तार्किक है। हिन्दी भाषा के पथ में अंग्रेजी के अध्ययन को माध्यम के रूप में थोपने का विरोधी हूं। अंग्रेजी दैनिक (टाइम्स आफ इंडिया) में कार्यरत रहा, मगर हिंदी में खूब लिखा। कई भारतीय भाषाओं को पढ़ा। मैं अंग्रेजी में शिक्षित हूं। अत: विरोधी हूं। हिन्दी केवल कॉलेज तक पढ़ी मगर खूब पढ़ी। अर्थात अंग्रेजी मेरे लिए अपनी जुबां स्वभाषा नहीं है।

K Vikram Rao
Mobile -9415000909
E-mail –k.vikramrao@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 03 मई 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

दानशीलता की मिशाल पेश करते सामाजिक संगठन पीपला फाउंडेशन

आरंग (विश्व परिवार)। पौराणिक काल से ही आरंग दानशीलता के लिए प्रख्यात रहा है। राजा मोरध्वज की दानशीलता की कहानी तो बच्चे बच्चे की जुबान पर सहज ही सुना जा सकता है।वही नगर के स्वयंसेवी सामाजिक संगठन पीपला वेलफेयर फाउंडेशन भी नगर में दानशीलता के अनेकों मिशाल पेश कर चुके हैं। विगत दो ढाई वर्षो से ग्रीष्म काल में मूक पशुओं के लिए जगह-जगह जल पात्र रखकर जल दान महादान अभियान चला रहे हैं।वहीं नगर के मुख्य मार्ग, मुक्तिधाम, सब्जी मंडी में लोगों को शीतल जल उपलब्ध कराने वाटर कूलर स्थापित किए हैं।नगर में जगह जगह पक्षियों के लिए सकोरा रखकर जल दान महा अभियान के साथ साथ सार्वजनिक प्याऊ केंद्र का संचालन कर रहे हैं। जिसकी इन दिनों नगर सहित अंचल में काफी सराहना हो रही है। वहीं ग्रामीण अंचलों में युवागण पीपला फाउंडेशन के कार्यों से प्रेरित होकर जनहित व रचनात्मक कार्य करने की पहल करने लगे हैं। इस तरह यह फाउंडेशन जन सरोकार व रचनात्मक कार्यों के लिए रोल मॉडल बनते जा रहा है।गत दिवस राहगीरों को शीतल जल के उपलब्ध कराने महासमुंद के बस स्टैंड में वाटर कूलर एक और वाटर कूलर की स्थापित किया गया। वही नगर में मूक जानवरों के लिए सैकड़ो स्थानों पर जल पात्र रखकर मूक पशुओं को जल पिला रहे हैं साथ ही उन जलपात्रों की देखरेख कर रहे हैं। फाउंडेशन के सदस्यों का कहना है प्यासे को पानी पिलाने से बेहतर जल का सदुपयोग भला और क्या हो सकता है।वहीं बरसात में पौधे दान जन अभियान, मकर संक्रांति में वस्त्रदान, लड्डू दान, वर्ष भर शिक्षा दान, नेत्रदान, समय-समय पर रक्तदान, मूक पशुओं के लिए जल पात्र दान, जरूरत मंदों को यथेष्ट धन दान, श्रमदान सहित सबसे बड़ी समय दान कर जनमानस में लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं।

सूरत एवं ब्रह्मपुर के मध्य तीन अतिरिक्त फेरे के लिए समर स्पेशल ट्रेन की सुविधा

समर के दौरान रायपुर से सूरत के तरफ आने एवं जाने के लिए मिलेगी अधिक आरक्षित बर्थ की सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। समर के दौरान रेल यात्रियो की मांग एवं सुविधाओ को ध्यान में रखते हुए सूरत एवं ब्रह्मपुर (उड़ीसा) के मध्य तीन अतिरिक्त फेरे के लिए समर स्पेशल ट्रेन की सुविधा दी जा रही है। 09069/09070 सूरत-ब्रह्मपुर-सूरत साप्ताहिक समर स्पेशल की सुविधा दिनांक 01 से 17 मई, 2024 तक इस गाडी का परिचालन रहेगा। 09069 सूरत-ब्रह्मपुर साप्ताहिक समर स्पेशल का परिचालन दिनांक 01, 08 एवं 15 मई, 2024 को प्रत्येक बुधवार को सूरत से रवाना होगी।

इसी प्रकार विपरीत 09070 ब्रह्मपुर-सूरत साप्ताहिक समर स्पेशल का परिचालन दिनांक 03, 10 एवं 17 मई, 2024 को प्रत्येक शुक्रवार को इस गाड़ी का परिचालन सूरत से होगा। इस गाड़ी में कुल 22 कोच उपलब्ध रहेंगे। इस गाड़ी की समय सारणी की विस्तृत जानाकरी इस प्रकार है-

इस गाड़ी की समय सारणी की विस्तृत जानाकरी इस प्रकार है -

09069 सूरत-ब्रह्मपुर साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन		↓स्टेशन↑	09070 ब्रह्मपुर-सूरत साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन	
पहुंच	छुट		पहुंच	छुट
--	14.20	सूरत	14.45	---
16.30	16.40	नंदूबार	11.42	11.52
17.55	17.57	धरनगांव	10.05	10.10
19.02	19.05	जलगांव	08.56	08.58
19.30	19.40	भुसावल	08.30	08.35
21.22	21.35	अकोला	05.58	06.00
00.28	00.30	वर्धा	01.55	01.57
02.05	02.10	नागपुर	00.10	00.20
03.26	03.28	तुमसर रोड	22.58	23.00
04.04	04.06	गोंदिया	21.45	21.47
06.10	06.15	दुर्ग	19.35	19.45
07.00	07.10	रायपुर	18.25	18.45
08.15	08.17	महासमुंद	16.03	16.05
09.03	09.05	खरीयार रोड	14.40	14.42
10.15	10.25	कांटाबंजी	13.30	13.35
11.00	11.10	टिटलागढ़	12.40	13.00
11.25	11.27	केसिंगा	12.18	12.20
12.25	123.27	मुनिगुडा	11.30	11.32
14.00	14.05	रायगड्डा	10.15	10.20
14.48	14.50	पार्वतीपुरम	09.28	09.30
15.13	15.15	बोबबीली	09.00	08.02
16.15	16.40	विजियनगरम	07.35	08.00
17.38	17.40	श्रीकाकुलम रोड	06.33	06.35
18.50	18.52	पलासा	05.30	05.32
20.15	----	ब्रह्मपुर	---	04.30

गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य कवि हृदय विनम्रसागर जी महाराज का संसघ हुआ विदिशा नगर में आगमन

विदिशा (विश्व परिवार)। गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य कवि हृदय विनम्रसागर जी महाराज का ससंघ हुआ। विदिशा आगमन अरिहंत विहार जैन मंदिर में है संघ विराजमान प्रतिदिन सुबह 8-15 से मंगल प्रवचन होंगे। शुक्रवार को भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के जन्म और तप कल्याणक अवसर पर किरीमोहल्ला स्थित महावीर जिनालय में प्रात: 6:30 बजे से संघ सानिध्य में होगा। मस्तकाभिषेक क्या लेकर तू आयाथा, क्या लेकर तू जाऐगा, मुट्ठी बांधे आया था हाथ पसारे जाऐगा। तेरा ही कर्म तेरा साथ निभायेगा। जीवन है पानी की बूंद कब मिट जाऐ रे काव्यात्मक शैली के साथ प्रवचन करते हुये आचार्य विनम्र सागर जी महाराज ने कहा कि सुबह सुबह उठकर सबसे पहले भगवान को स्मरण किया करो जो व्यक्ति प्रतिदिन भगवान का अभिषेक एवं गुरुओं का दर्शन करता है उसका पूरा दिन अच्छा गुजरता है। सकल दि.जैन समाज के प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया आज प्रात:कालीन बेला में गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के शिष्य भक्तामर बाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध एवं जीवन है पानी की बूंद के रचयिता आचार्य श्री विनम्र सागर जी महाराज का संघ सहित नगर आगमन हुआ श्री धर्मनाथ दि. जैन मंदिर वंटीनगर सागर पुलिया से उनकी भव्य मंगल अगवानी की गयी। आचार्य श्री संघ ने नव निर्मित जिनालय के दर्शन किये तदुपरांत अरिहंत विहार जैन मंदिर पहुंचे। अरिहंत विहार कालोनी का समूचा बातावरण धर्ममय था स्थान स्थान पर भक्तगण अपने अपने घरों के सामने रांगोली सजाऐ तथा महिलाऐं अपने महिलामंडल एवं विशेष डिरेसकोड के साथ सिर पर मंगल कलश धारण कर आचार्य श्री संघ की मंगल अगवानी कर रही थी वंही पुरुष वर्ग हाथों में प्रासुक जल लेकर अपने हाथों से गुरू के चरण पखारने को आतुर थे। सभी ने भक्ती भाव से पाद प्रच्छालन किया एवं गंधोदक को माथे से लगाया प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया विदिशा नगर में आचार्य श्री ब्रहम्चारी अबस्था तथा मुनि अबस्था में दो बार आ चुके है। आचार्य बनने के पश्चात यह प्रथम आगमन है तथा आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के

गुरुभाई है। आचार्य श्री ने अरिहंत विहार जैन मंदिर में पहले ही दिन अपनी काव्यात्मक शैली में प्रवचन करते हुये शुद्ध उच्चारण के साथ संसार की दशा का वर्णन किया और कहा कि देखने कहने और सुनने में आता है कि खाली हाथ आऐ थे और खाली हाथ ही जाऐंगे लेकिन इंसान कर्म के साथ ही आता है और कर्म के साथ ही जाऐगा उन्होंने बचपन युवा और बुड़ापे की अबस्था का वर्णन करते हुये कहा कि जब तक चल रहा है तब तक चल रहा है किसी को कुछ नहीं पता कि उसकी यात्रा में कब ब्रेक लग जाऐ? जो दिखाई दे रहा है वह सभी नौकर्म है इन नौ कर्म से ही आपके भाव बनते है तथा भाव से ही कर्म बनते है तो सबसे पहले अपने भावों को सम्हालना आवश्यक है। अच्छे भाव बने रहें उसके लिये आबश्यक है कि भगवान का आशीर्वाद और गुरु का सानिध्य बना रहे उन्होंने प्रश्न करते हुये कहा कि अच्छा बताइये जब आप मंदिर में रहते है तो आपके भाव अलग रहते है और जब बाजार या घर पर रहते है तो भाव अलग रहते है? आचार्य श्री ने कहा कि हर व्यक्ति की भावना होती है कि वह अच्छी बस्तु को देखे उसके साथ अच्छा ही अच्छा हो तो अच्छा पाने के लिये अच्छा भी करा कीजिये उन्होंने पुन्हा प्रश्न करते हुये कहा कि बताइये सबेरे उठकर आप सबसे पहले किसको देखते हो? इधर उधर के ख्यालों में न जाकर सुबह सुबह सबसे पहले भगवान का स्मरण किया करो जिससे आपका पूरा दिन अच्छा गुजरे। उन्होंने कहा कि आपके मौहल्ले में ही मंदिर होंने के उपरांत भी यदि आप भगवान का अभिषेक दर्शन पूजन नहीं करते है तो आप सबसे बड़े गुनहगार है। उन्होंने कहा कि जीवन में कोई भी तुम्हारा साथ निभाने बाला नहीं तेरे ही कर्म तेरे साथ आऐ थे और तेरे ही कर्म तेरा साथ निभाऐंगे उन्होंने आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के अबतरण दिबस पर बोलते हुये कहा कि गुरुदेव की तपस्या के 61 वर्ष पूर्ण हो गये और यह आश्चर्य है कि इन इकसठ बर्षों में गुरुदेव ने 130 साधुओं की समाधि कराके देव लोक में भी एक संघ खड़ा कर दिया हम लोग आचार्य श्री से कहते है कि आपने दो संघ का निर्माण कर दिया एक संघ वह है जो इस धरती पर विचरण कर रहा है तथा दूसरा संघ बह है जो ऊपर देब लोक में बना हुआ है। उन्होनें कहा कि आचार्य श्री ने बालकों तथा पालकों दौनों को ही श्रमण संस्कृति की शिक्षा दी है बालकों से कहा कि तुम मुनि बनकर नगर नगर जाकर धर्म की प्रभावना करो और पालकों से कहा कि तुम मुनि बन समाधि मरण करो और अपना अंतिम समय सम्हालो प्रतिदिन प्रवचन 8:15 से अरिहंत विहार जैन मंदिर में होंगे श्री सकल दि. जैन समाज एवं अरिहंत विहार मंदिर ट्रस्ट ने साधर्मी बंधुओं से धर्म लाभ लेंने की अपील की है।

-अविनाश जैन

जैन धर्म के 20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ का ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया गया

जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव मनायेंगे आज, पूजा अर्चना के होगें विशेष आयोजन

जयपुर (विश्व परिवार)। जैन धर्म के बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ का ज्ञान कल्याणक गुरुवार, 02 मई को भक्तिभाव से मनाया गया। वहीं भगवान का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव शुक्रवार 3 मई को भक्ति भाव से मनाया जाएगा।

राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन %कोटखावदा% के अनुसार इस मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होगें। प्रात: अभिषेक, शांतिधारा के बाद पूजा अर्चना की जावेगी। पूजा के दौरान जन्म व तप कल्याणक श्लोक का उच्चारण करते हुए अर्घ्य चढाये जायेगे। श्री जैन के मुताबिक आगरा रोड पर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी, मोती सिंह भोमियो का रास्ता स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौबीस महाराज, कल्याण नगर के श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, वाटिका के मुनिसुव्रतनाथ नवग्रह दिगम्बर जैन मंदिर, महल योजना के श्री मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन मंदिर तथा सांगानेर के संघीजी दिगम्बर जैन मंदिर सहित शहर के अन्य मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होगें।

राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक गुरुवार को आयोजित ज्ञान कल्याणक महोत्सव में प्रात: भगवान मुनिसुव्रतनाथ के अभिषेक के बाद विश्व में सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना करते हुए श्री जी की शांतिधारा की गई। तत्पश्चात भगवान मुनिसुव्रतनाथ की अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना की गई।पूजा के दौरान ज्ञान कल्याणक श्लोक- वरकेवलज्ञान उद्योत किया, नवमी वयसाख वदी सुखिया। घनि मोहनिशाभनि मोखमगा, हम पूजि चहैं भवसिन्धु थगा। का सामूहिक उच्चारण करते हुए जयकारों के साथ ज्ञान कल्याणक अर्घ्य चढाया गया। महाआरती से समापन हुआ।

श्री जैन ने बताया कि शुक्रवार को शहर के 225 से अधिक जैन मंदिरों में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के ज्ञान, जन्म और तप कल्याणक महोत्सव मनाये जायेगें। **-विनोद जैन कोटखावदा**

शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में दस दिवसीय समर कैम्प शुरू, कुलपतियों की उपस्थिति में हुआ शुभारम्भ

वर्तमान शिक्षा नैतिक मूल्यों के बिना अधूरी है : डॉ. गिरीश चन्दोल

ब्रह्माकुमारी सविता ने कहा- वर्तमान शिक्षा जीविकोपार्जन तक सीमित

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शिक्षाविद सेवा प्रभाग द्वारा बच्चों के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में आयोजित समर कैम्प का शुभारम्भ इन्दिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चन्दोल, आंजनेय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. टी. रामाराव, रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी और ब्रह्माकुमारी अदिति दीदी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया।

इन्दिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चन्दोल ने कहा कि पहले घर में माता-पिता और बुजुर्गों से जो शिक्षा मिलती थी वह आज नहीं मिल पा रही है। नैतिक शिक्षा के अभाव में हम बच्चों को भविष्य में मिलने वाली असफलता के लिए तैयार नहीं कर पा रहे हैं। फलस्वरूप बच्चे अपने जीवन को ही समाप्त कर लेते हैं। वर्चुअल शिक्षा पर ज्यादा निर्भर होने के कारण परिवार में वैचारिक लेन-देन का अभाव सा हो गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धा के युग में टिके रहने के लिए आशा और निराशा दोनों का सामना करने की शक्ति हमारे अन्दर होनी चाहिए। इसलिए पारम्परिक शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा को शामिल करने की जरूरत है।

आंजनेय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. टी. रामाराव ने कहा कि जीवन में अनेक समस्याएं आएंगी किन्तु उन चुनौतियों से घबराकर दूर नही भागना है। बल्कि उनका सामना कर आगे बढना है। तभी हम सफल कहलाएंगे। उन्होंने बतलाया कि घड़ी को अंग्रेजी में वाच कहते हैं। इसका एक-एक शब्द हमें शिक्षा देता है। पहला शब्द है डब्लू जो कि हमें बतलाता है कि वाच युअर वर्ड अर्थात अपने शब्दों पर ध्यान दो। सबसे मीठा बोलो। कटु वचन न बोलो। फिर है -ए शब्द जो कहता है कि वाच युअर एक्शन अर्थात अच्छे कर्म करो। फिर आता है -टी शब्द जो कहता है कि वाच युअर थॉट्स। सदैव सबके लिए शुभ सोचो। फिर है सी अर्थात वाच युअर कैरेक्टर। हमारा व्यवहार ठीक हो। अन्त में है-एच शब्द जो कहता है कि वाच युअर हार्ट अर्थात इस जगत में जितने प्राणी हैं उन सबके साथ प्रेम से रहना।

रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि आज बच्चों के सामने जीवन को महान बनाने का कोई लक्ष्य नहीं है। जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान शिक्षा महज जीविकोपार्जन का माध्यम बनकर रह गई है। ऐसे समय पर ब्रह्माकुमारी संस्थान एकमात्र ऐसा संगठन है जहाँ पर मानव मात्र को दैवी गुणों से सम्पन्न बनाने का कार्य किया जा रहा है।

राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी अदिति दीदी ने कहा कि बाल्यावस्था जीवन का सबसे अनमोल समय है। इस समय हम जैसा चाहें वैसा अपने संस्कारों और विचारों को ढाल सकते हैं। बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ दैवी गुणों को धारण करने पर भी पूरा ध्यान देना चाहिए। तब ही उनका व्यक्तित्व सम्पूर्ण और आकर्षक बन सकेगा। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार प्रियंका कौशल ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी रूचिका दीदी ने किया।

गौरवपथ को नगर निगम ने किया चकाचक

रायपुर (आरएनएस)। रायपुर नगर निगम के द्वारा गौरवपथ के क्षतिग्रस्त मार्ग को सुधारने के लिए डामरीकरण का कार्य करवाया जा रहा। ये काम आज रात खत्म हो गया। निगम के कार्यपालन अभियंता संजय वर्मा ने बताया कि गौरवपथ में कलेक्ट्रेट मल्टीलेवल पार्किंग अम्बेडकर चैक से लेकर तेलीबांधा तक का मार्ग क्षतिग्रस्त हो गया था। जिसकी शिकायत आम लोगों के साथ ही जनप्रतिनिधियों से भी मिल रही थी। कमिश्नर अबिनाश मिश्रा के निर्देश पर इस मार्ग के सुधार के लिए मार्च महीने से कार्य प्रारंभ किया गया। व्यस्त मार्ग होने के कारण इस मार्ग में दिन में कार्य कराना सम्भव नहीं होता। इस वजह से यहां रात में ही काम किया गया। पहले इस मार्ग के एक ओर मार्ग का डामरीकरण किया गया। वहीं दूसरा मार्ग आवाजाही के के लिए खुला रखा गया। एक ओर का काम खत्म होने के बाद इसके दूसरे मार्ग का डामरीकरण का कार्य किया गया। आज ये कार्य भी पूर्ण कर लिया गया। सड़क क्षतिग्रस्त नहीं होने से अब गाड़ियां यहां से सरपट निकल सकेंगी।

भावना बोहरा ने दुर्ग लोकसभा में किया चुनाव प्रचार, महतारी वंदन योजना की लाभार्थी महिलाओं को किया सम्मानित

महिलाओं को आर्थिक एवं आधुनिक रूप से सशक्त बनाने के लिए भाजपा प्रतिबद्ध : विधायक

रायपुर (विश्व परिवार)। 7 मई को छत्तीसगढ़ में होने वाले तीसरे चरण के लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पंडरिया विधायक भावना बोहरा का जनसंपर्क लगातार जारी है। बुधवार को उन्होंने दुर्ग लोकसभा के पाटन विधानसभा में ग्राम महुदा, अरसनारा एवं जामगांव में आयोजित महतारी वंदन योजना लाभार्थी सम्मान समारोह में सम्मिलित होकर योजना से लाभान्वित महिलाओं को सम्मानित किया और विभिन्न क्षेत्रों में जनसंपर्क कर भाजपा को वोट देने की अपील कर केंद्र की मोदी सरकार एवं छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार की योजनाओं की जानकारी दी।

इस अवसर पर उन्होंने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण से लेकर उनके स्वास्थ्य, स्वावलंबन तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। महिलाओं के प्रति संचालित योजनाओं से आज देश की करोड़ों नारी शक्तियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। उज्ज्वला योजना से उन्हें धुएं से मुक्ति मिली तो वहीं बेहतर स्वास्थ्य का उपहार मिला है। नमो ड्रोन दीदी योजना के माध्यम से आज देश एवं प्रदेश की महिलाओं को आधुनिकता से जोड़ते हुए उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है तो वहिन्न लखपति दीदी योजना के माध्यम से उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का काम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा किया जा रहा है। हमारे छत्तीसगढ़ में भी मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में महतारी वंदन योजना के माध्यम से प्रति माह प्रदेश की 70 लाख विवाहित महिलाओं को 1000 रुपए की आर्थिक सहायता दिए जाने से प्रदेश की महिलाओं में भी एक नया उत्साह एवं विश्वास देखने को मिल रहा है।

भावना बोहरा ने आगे कहा कि आज जब मैं महतारी वंदन योजना सम्मान समारोह में योजना से लाभान्वित माताओं-बहनों से संवाद किया तो उनके अन्दर एक अलग ही उत्साह देखने को मिल रहा है। उनका यह उत्साह ही भाजपा और मोदी जी की गारंटी के प्रति विश्वास है। हमें पूर्ण विश्वास है की प्रदेश की माताओं-बहनों के आशीर्वाद से हम लोकसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ की सभी 11 सीटों में प्रचंड जीत हासिल करेंगे और अबकी बार 400 पार के लक्ष्य को सार्थक करेंगे। आज केंद्र की योजनाओं से छत्तीसगढ़ में निरंतर विकास हो रहा है। पांच वर्षों के कांग्रेस के कुशासन से त्रस्त प्रदेश की जनता ने अपने जनाधार से पुन: छत्तीसगढ़ में सुशासन का सूर्योदय किया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल मार्गदर्शन तथा मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में प्रदेश में डबल इंजन की सरकार बनाई। नल जल योजना के माध्यम से आज प्रदेश के लाखों घरों में स्वच्छ जल पहुंचा है, 18 लाख नए आवास की स्वीकृति भाजपा सरकार ने दी जिसे कांग्रेस ने रोक के रखा था।

उन्होंने आगे कहा कि किसानों को दो वर्ष का बकाया बोनस, 3100 रूपए/क्विंटल में धान खरीदी, प्रदेश के युवाओं के भविष्य की सुरक्षा हेतु पीएससी घोटाले की सीबीआई जांच जैसे महत्वपूर्ण निर्णय एवं योजनाओं का क्रियान्वयन हमें धरातल में देखने को मिल रहा है। आने वाले पांच वर्षों में भी छत्तीसगढ़ में यह विकास की गति और जनता के हित के लिए जो भी हितकारी निर्णय होंगे हमारी सरकार लगातार उनपर अमल करेगी। मोदी जी की गारंटी पर जनता को पूर्ण विश्वास है और यही विश्वास 4 जून को पूरे भारत में कमल खिलाकर भारत को मोदी जी के नेतृत्व में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में सहायक सिद्ध होगी। भाजपा अपने लक्ष्यों को पूरा करने में विश्वास रखती है और विगत 10 वर्षों में हमने देखा कि मोदी जी ने जो संकल्प किया था चाहे वह राम मंदिर का निर्माण, धारा 370 हटाना, तीन तलाक कानून को समाप्त करना हो, नारी शक्ति वंदन अधिनियम जैसे कई महत्वपूर्ण एवं देश व जनता के हित के लिए बड़े निर्णय को पूरा किया है। यह सभी जनता के विश्वास और समर्थन से ही सिद्ध हुआ है और आने वाले पांच वर्ष भी जनता के सहयोग व समर्थन से हम विकसित भारत-विकसित छत्तीसगढ़ के लक्ष्य को जरुर प्राप्त करेंगे।

जैन धरोहर दिवस के रूप में स्मरण किए गए स्व. निर्मल कुमार जी सेठी

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के पूर्व अध्यक्ष स्व. निर्मल कुमार जी सेठी की तृतीय पुण्यतिथि पर देशभर के 200 शहरों में श्रावक समुदाय के द्वारा जैन धरोहर दिवस के रूप में उन्हें स्मरण कर विनयांजलि दी गई। एक सप्ताह से भी कम समय की पूर्व सूचना पर पूरे देश का जैन समाज अपने प्रिय नेता को विनयांजलि देने के लिए भावातुर हो उठा। यह उनकी लोकप्रियता का आज भी जीवंत उदाहरण है। उनके द्वारा जीवन में किए गए पुरातत्व संरक्षण एवं सद कार्यों को स्मरण कर लोग अश्रुपूरित थे।

अपने अध्यक्षीय कार्यकाल के 40 वर्षों में स्वर्गीय सेठी जी ने लगभग 40 देशों में भ्रमण कर जैन पुरातत्व पर शोध, सर्वेक्षण एवं अनुसंधान का कार्य जारी रखा। उनके द्वारा विषय के विशेषज्ञ विद्वानों का डेलिगेशन साथ लेकर अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, कंबोडिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड एवं श्रीलंका आदि अनेक देशों में यूनिवर्सिटीज एवं कॉलेजेज में सेमिनारे आयोजित की गई, बौद्धिक संगठनों के बीच वार्ताये आयोजित की गई तथा विश्व धर्म सम्मेलन को संबोधित किया गया।

श्री सेठी जी का जन्म इसलिए नहीं हुआ कि वह अपना नाम इतिहास के पन्नों पर दर्ज करा सके बल्कि इसलिए हुआ था कि विश्व में विस्मृति हो रही जैन पूरा निधि की खोज कर वे उसे सप्रमाण गर्व के साथ इतिहास के पन्नों पर दर्ज करा सके और उन्होंने इस कार्य को बखूबी पूरा किया। आज हमारा दायित्व बनता है कि उनके कार्यो को हम उन्ही की तर्ज पर आगे जारी रखें तथा अगला जैन धरोहर दिवस पूरी तैयारी के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाएं एवं राजधानी दिल्ली में उनकी स्मृति में उनके नाम से किसी भवन अथवा ऑडिटोरियम का निर्माण करा सके।

इस बार उनकी तृतीय पुण्यतिथि का मुख्य समारोह दिनांक 27 से 28 अप्रैल 2024 को श्रवणबेलगोला एवं बेंगलुरु में आयोजित किया गया। अनुशासित रूप से मिनट टू मिनट संचालित इस कार्यक्रम की शोभा देखते ही बनती थी।

जैन धरोहर दिवस एवं श्री सेठी जी की पुण्यतिथि के आयोजन के अनेक स्थानों से समाचार एवं फोटोग्राफ्स प्राप्त हुए हैं। निम्न अनुसार प्रदेश वाइज लगभग 200 स्थान से श्री सेठी जी को विनयांजलि देना हमारी भावनात्मक एकता एवं श्री सेठी जी के प्रति श्रद्धा भक्ति को दर्शाती है।

प्राप्त आकड़ो के अनुसार राजस्थान में 30, असम में 24, उत्तर प्रदेश 26, छत्तीसगढ़ 24 पश्चिम बंगाल 20, मध्य प्रदेश 11, महाराष्ट्र 10, झारखंड 2, बिहार 2, जम्मू 1, अन्य 50 (कर्नाटक केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र, उड़ीसा गुजरात, हरियाणा एवं पंजाब) इसप्रकार कुल 200 स्थानों पर विनयांजलि दी गई।

-कैलाश रारा

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 03 मई 2024

संक्षिप्त समाचार

बीस लीटर कच्ची महुआ शराब के साथ आरोपी गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। थाना भखारा को दिनांक 29.04.24 को मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम रामपुर किकेट मैदान गौठान के पास एक व्यक्ति अवैध रूप से शराब बिकी करने ले जा रहा है कि सूचना पर हमराह स्टॉफएवं गवाहन के मुखबिर के बताये स्थान में जाकर घेराबंदी कर एक व्यक्ति को सफेद रंग के प्लास्टिक बोरी में अवैध रूप से शराब रखे पाये जाने पर नाम पता पूछने पर अपना नाम अवध राम नेताम पिता स्व0 प्रेमलाल नेताम उम्र 55 वर्ष साकिन रामपुर से देशी प्लेन शराब 07 नग पौवा, देशी मशाला शराब 03 नग पौवा एवं 06 नग गोवा स्पेशल अंग्रेजी शराब प्रत्येक में 180 180 एमएल एवं 03 पीले रंग के प्लास्टिक जरिकेन प्रत्येक में 06-06 लीटर हाथ भटठी से बना महुआ शराब कुल जुमला 20 लीटर 880 मिली लीटर कीमती 3480/- रूपये रखे मिला। आरोपी-:अवध राम नेताम पिता स्व0 प्रेमलाल नेताम उम्र 55 वर्ष साकिन रामपुरथाना भखारा, जिला धमतरी (छ.ग.) आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया। सम्पूर्ण कार्यवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक लेखराम ठाकुर, प्रआर.राम सिंह साहू,अश्वनी बंजारे,आरक्षक हरिशंकर सिन्हा, खुमान लाल साहू, मिथलेश खापर्डे, गोपाल साहू एवं महिला आरक्षक भारती साहू का विशेष योगदान रहा।

विकासखंड स्तरीय तीन दिवसीय प्रशिक्षण

सुकमा(विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय सुकमा में स्वामी विवेकानंद बहुउद्देशीय सभागार में विगत दिवस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्री जी.आर.मण्डावी जिला शिक्षा अधिकारी ने बालवाडी नोडल शिक्षक एंव आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता को संबोधित किया। उन्होने शिक्षा विभाग एंव महिला विकास विभाग को बालवाड़ी के नियमित संचालन करने, बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास ध्यान करते हुए कार्य करने, बालवाड़ी में बच्चों के नियमित ठहराव हेतु रोचक गतिविधियां कराए जाने आदि विषयों पर उद्बोधन दिया। 27 से 29 अप्रैल 2024 चलाये गए, तीन दिवसीय प्रशिक्षण में मास्टर टेनर्स के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधान, बच्चों के विकास के आयाम, विभिन्न स्थानीय खेल खिलौना का बालवाड़ी में उपयोग, गीत-कहानियां, निष्ठा 3.0कोर्स, एफएलएन मिशन 2026-27 के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में श्री सीताराम सिंह राणा एपीसी समग्र शिक्षा, श्री बैसुराम मरकाम एपीसी सुकमा विकासखंड सुकमा से श्री प्रफुल्ल कुमार डेनियल एबीईओ, श्री दीपक बारसे बीआरसी सुकमा, मास्टर टेनर्स सुश्री रश्मि चन्द्रवंशी आईसीडीएस, श्री संदीप सोनकर, श्री महेन्द्र साहू, श्री भागवत यादव सहित सुकमा, कोन्टा से आए शिक्षकगण, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता शामिल हुए।

गांजा के साथ दो युवक व नाबालिग गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। कोतवाली पुलिस पेट्रोलिंग को सूचना मिली की बस स्टैंड में यात्री प्रतीक्षालय के पास दो युवक संदिग्ध अवस्था में खड़े हैं की सूचना पर तत्काल पेट्रोलिंग रवाना किया गया। वहां जाकर घेरने की कोशिश की गई तो छुपने लगे,दोनों को पड़कर जब पूछताछ की गई। पूछताछ करने पर अपना नाम धर्मेंद्र सोनकर 27 वर्ष पिता हीरामन सोनकर साकिन फटिया थाना सैयदरजा जिला चंदौली उत्तर प्रदेश बताया,साथ में एक विधि से संघर्षरत बालक भी था। गवाहों के समक्ष तलाशी लिया गया तलाशी के दौरान दो बैग में लगभग साढे 21 किलो 530 ग्राम मादक पदार्थ , एक बैग में 10 किलो 270 ग्राम और दूसरे बैग में 11 किलो 260 ग्राम गांजा गवाहों के समक्ष जब्त किया गया। कुल वजन 21 किलो 530 किलो ग्राम गांजा बाजार कीमती 2,15,300/-रू को जब्त कर आरोपी के विरुद्ध थाना कोतवाली में अपराध पंजीबद्ध कर धारा 20 (ख)एनडीपीएस एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया। एवं विधि से संघर्षरत बालक को किशोर न्याय बोर्ड में पेश किया गया।

इनामी महिला नक्सली ने किया आत्मसमर्पण

सुकमा(विश्व परिवार)। एक लाख की इनामी महिला नक्सली ने पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया है. महिला नक्सली सुकमा क्षेत्र में सक्रिय थी और उस पर छत्तीसगढ़ शासन ने 1 लाख रुपए का इनाम घोषित किया था. आत्मसमर्पण करने वाली महिला माओवादी थाना चिंतागुफ़ा क्षेत्र की निवासी है. बता दें कि सुकमा पुलिस पूना नर्कोम अभियान चला रही है. बस्तर के अंदरूनी क्षेत्रों में लगातार सुरक्षा कैंप लगाए जा रहे हैं. इस अभियान से प्रभावित होकर माओवादी हथियार डाल रहे हैं और हिंसा का रास्ता छोड़कर समाज की मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं. महिला माओवादी को आत्मसमर्पण के लिए प्रोत्साहित करने में विशेष आसूचना शाखा सुकमा का विशेष योगदान रहा.

कोरबा लोकसभा की बीजेपी उम्मीदवार डॉ सरोज पांडेय ने किया रोड शो

सरोज पांडेय ने गेवरा बाजार और छूरी बाजार में किया रोड शो, जनता से अपील कर मांगी वोट '

कोरबा(विश्व परिवार)। भाजपा सांसद प्रत्याशी डॉ सरोज पांडेय मंगलवार को अपने चुनावी जनसंपर्क के दौरान कटघोरा विधानसभा पहुंची, जहां उन्होंने विधानसभा के दो अलग अलग जगह गेवरा व छूरी बाजार में रोड शो किया और स्थानीय व्यापारियों व रहवासियों से घर घर जाकर अपने लिए वोट मांगा। वही प्रत्याशी के पहुँचने पर स्थानीय कार्यकर्ताओ ने गाजे-बाजे के साथ भाजपा प्रत्याशी का स्वागत किया। सरोज पांडेय ने अपने दोनों रोड शो की शुरुआत स्थानीय मंदिरो मे पूजा-आराधना करके किया। भाजपा प्रत्याशी सरोज पांडेय के रोड शो में शामिल कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल व भाजपा नेता ज्योतिनंद दुबे सहित अन्य भाजपा नेताओ ने रोड शो में लोगो का अभिवादन करते हुए मतदाताओं से वोट मांगा और भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को विजय बनाने की अपील की। रोड शो के दौरान प्रत्याशी सरोज पांडेय ने जनता के समक्ष केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को बताया और कहा कि हमारे प्रधानमंत्री ने छत्तीसगढ़ प्रदेश में कई कामो की सरकार बनने के बाद गारंटी दी थी वह सब पूरी होती दिखी, हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2047 में विकसित भारत संकल्प की गारंटी दी है जो पूरे होने की गारंटी है।

मेहनतकश श्रमिकों ने कहा मतदान करबो- कराबो

कोरिया(विश्व परिवार)। अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस पर जहाँ देश-दुनिया में मजदूरों, श्रमिकों का सम्मान किया जा रहा है, तो वहीं कोरिया जिले के सोनहत जनपद पंचायत द्वारा मनरेगा में कार्यरत श्रमिकों व अन्य कामगारों को लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा निर्वाचन के तहत 7 मई को होने वाले मतदान के लिए जन-जागरूकता चलाया गया। इन श्रमिकों के श्रम का सम्मान करते हुए उन्हें मताधिकार के बारे में भी जानकारी दी और उन्हें शपथ भी दिलाया गया। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी विनय कुमार लंगेह लगातार जिले के हर वर्ग के मतदाताओं को 7 मई को याद से मतदान करने के लिए अपील कर रहे हैं। लंगेह ने कहा कि किसी भी समाज, देश, संस्था व उद्योग में मज़दूरों, कामगारों और मेहनतकशों की अहम भूमिका होती है। समाज, देश के विकास में इन श्रमिकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन मेहनतकश श्रमिकों के बिना कोई भी औद्योगिक ढांचा खड़ा नहीं किया जा सकता। श्रमिक दिवस के अवसर पर श्रमिक भाई-बहनों को बधाई व शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश के विकास में इनके योगदान अतुलनीय है। इसी कड़ी में आज सोनहत जनपद पंचायत के ग्राम पुसला एवं कटगोडी में चल रहे महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी (मनरेगा) में कार्यरत श्रमिकों को 7 मई को होने वाले मतदान के लिए आमंत्रण पत्र दिए गए। साथ ही कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी विनय कुमार लंगेह द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत मतदान करने की अपील पत्र जनपद पंचायत सीईओ मनोज सिंह जगत ने प्रदान किया।

बंद करने की हो रही साजिश, आत्मानंद स्कूलों में दो माह से शिक्षकों को नहीं मिला वेतन

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा देने पूरे प्रदेश में घूम-घूम कर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सैकड़ों स्वामी आत्मानंद स्कूल आरंभ किया था। नेता और अधिकारी इस योजना की तारीफ करते नहीं थक रहे थे, क्योंकि यह पूर्व मुख्यमंत्री की ड्रीम प्रोजेक्ट था, लेकिन अब इस योजना की कोई बात तक नहीं करना चाहता। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि शिक्षकों को दो माह से वेतन तक नहीं दिया जा रहा है। छत्तीसगढ़ पैरेंट्स एसोसियेशन के प्रदेश अध्यक्ष क्रिष्टोफर पॉल ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर पूछा है कि क्या सरकार बदलते ही बदले की भावना से इस योजना को बंद करने की योजना बनाई जा रही है, क्योंकि शिक्षको को दो माह से वेतन नही दिया जा रहा है। पॉल ने बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री की महत्वकांशी योजना स्वामी आत्मानंद स्कूलों की स्थिति बेहद चिंताजनक है, जिन संविदा कर्मचारियों की नियुक्ति की गई, उन्हें वेतन नहीं दिया जा रहा है, और जहां-जहां नए स्वामी आत्मानंद स्कूल आरंभ किया गया, वहां कर्मचारी नहीं दिया जा रहा है। कलेक्टर को अध्यक्ष बनाया गया है, लेकिन इसके बावजूद अब इस योजना का भगवान ही मालिक है। पूर्व में डीएमएफ फंड से संविदा कर्मचारीयों को वेतन दे दिया जाता था, लेकिन अब ऐसा नही किया जा रहा है। पॉल ने बताया कि कुछ माह पूर्व तक अधिकारी और नेता इस योजना की तारीफ करते नहीं थक रहे थे, अब बात करने कतरा रहे है। स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल के शिक्षकों को दो महीने से वेतन वेतन नहीं मिलने से संविदा शिक्षकों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई, इससे पहले, शिक्षा विभाग डीएमएफ फंड से राशि लेकर शिक्षकों को वेतन देता था। संविदा कर्मचारियों के वेतन के लिए दिनांक 24.05.2023 को पूर्व की सरकार ने 207 करोड़ 50 लाख रुपये का बजट आवंटित किया गया था, लेकिन फंड कहां गया यह जांच का विषय है। वेतन नहीं मिलने से घर चलाना, बच्चों की फीस और बैंक का लोन इन बातों को लेकर संविदा कर्मचारी परेशान है, लेकिन कोई जिम्मेदार अधिकारी उनकी समस्या का समाधान करने तैयार नजर नहीं आ रहा है। कुल मिलाकर यह योजना भी अब अपनी अंतिम सांस ले रही है।

बाल विवाह एक सामाजिक बुराई, कुप्रथा को रोकने, कलेक्टर ने की अपील

बाल विवाह होने पर दे सकते हैं प्रशासन कों सूचना

मोहला(विश्व परिवार)। कलेक्टर एस जयवर्धन ने जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी के अंतर्गत बाल विवाह को रोकने के लिए जिले के नागरिकों से अपील किया है। कलेक्टर ने अपील करते हुए कहा कि जिले के अंतर्गत यदि कहीं बाल विवाह का आयोजन होता है, तो इसे रोकने के लिए आगे आयें। जिले के कोई भी नागरिक बाल विवाह को रोकने के लिए जिला प्रशासन या महिला बाल विकास विभाग को सूचना दे सकते हैं। कलेक्टर ने जिले के सभी मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत, सभी परियोजना अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, सभी खंड चिकित्सा अधिकारी, सभी खंड शिक्षा अधिकारी, नगर पंचायत अम्बागढ़ चौकी के मुख्य नगर पालिकाधिकारी को बाल विवाह रोके जाने के संबंध में आवश्यक कार्यवाही करने निर्देशित किया है। विदित हो कि बाल विवाह एक सामाजिक बुराई ही नहीं कानूनन अपराध भी है। बाल विवाह से बच्चों का सर्वांगीण विकास प्रभावित होता है। बाल विवाह के कारण बच्चों में कुपोषण, शिशु मृत्यु दर एवं मातृ मृत्यु दर के साथ ही घरेलू हिंसा में वृद्धि होती है। बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के अंतर्गत बाल विवाह करने वाले वर एवं वधु के माता-पिता, सगे संबंधी, बाराती व पुरोहित पर भी कानूनी कार्यवाही की जा सकती है। यदि वर या कन्या विवाह पश्चात, बाल विवाह को स्वीकार नहीं करते हैं तो बालिग होने के पश्चात विवाह कों शून्य घोषित करने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस पर मनरेगा श्रमिकों ने ली शत-प्रतिशत मतदान की शपथ

56 हजार से अधिक मनरेगा श्रमिकों ने ली शपथ, ग्रामीण मतदाताओं को मतदान हेतु किया प्रेरित

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन एवं स्वीप नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा सीईओ मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दौरान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में युवा, महिला, पुरूष सहित स्कूल-कॉलेजों के छात्र-छात्राओं द्वारा लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने हेतु नुक्कड़-नाटक, रैली, नारा-लेखन, निबंध, भाषण, मेहंदी प्रतियोगिता, पोस्टर निर्माण जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस पर जिले की ग्राम पंचायतों में महात्मा गांधी नरेगा के कार्यों में कार्यरत् 56,046 श्रमिकों ने शत प्रतिशत मतदान करने की शपथ लेकर ग्रामीण मतदाताओं को मतदान जागरूकता का संदेश दिया। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के कार्यस्थलों पर तकनीकी सहायक, रोजगार सहायकों ने मनरेगा श्रमिकों को लोकसभा निर्वाचन 2024 में बिना किसी भय, प्रलोभन व पक्षपात के मतदान कर लोकतंत्र को सशक्त बनाने की शपथ दिलाई। उल्लेखनीय है कि श्रमिक दिवस के अवसर पर मनरेगा के तहत जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों में 2258 कार्य संचालित हैं।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करें - कलेक्टर

कलेक्टर ने ग्रीष्म ऋतु को ध्यान में रखते हुए पेयजल उपलब्धता के लिए अधिकारियों ली बैठक

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए पेयजल की समस्या न हो इसके लिए जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आज अधिकारियों की बैठक ली। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि गर्मी के मौसम के दृष्टिगत जनसामान्य को पेयजल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए। उन्होंने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सभी अधिकारियों को समन्वित तरीके से कार्य करने कहा। उन्होंने पेयजल से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या का तत्काल निदान करने निर्देश दिए हैं। उन्होंने जिले के नगरीय निकाय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता के संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा की तथा संबंधित अधिकारियों से जिले में स्थापित हैण्डपम्प एवं बोरवेल की जानकारी ली। उन्होंने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, जल संसाधन तथा नगरीय निकायों एवं जनपद पंचायतों के अधिकारियों को समन्वय बनाकर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी ग्रामों एवं नगरीय निकायों में हैण्डपम्प और बोर चालू हालत में रहे। जिससे लोगों को पर्याप्त मात्रा में पेयजल मिल सके। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने पीएचई विभाग के अधिकारी को निर्देश दिये कि गांव में जाकर ग्रामीणों से चर्चा कर समस्या का समाधान करें। ऐसे ग्राम जहां पेयजल की समस्या आ रही है उसका चिन्हांकन कर निराकरण करने के लिए जनपद सीईओ को निर्देश दिए। उन्होंने सभी जनपद सीईओ को निर्देश दिए कि जिन ग्रामों में मोटर खराब हो गई, वॉल्व खराब हो गया उनका निराकरण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि जिन ग्रामों में पूर्व से पेयजल संबंधित समस्या ग्रीष्मकाल में आती है या भूजल का स्तर गिरता रहा है वहां पहले से सतर्कता से व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाये।

मोतियाबिंद मुक्त बस्तर के लिए जल्द शुरू होगा तीसरा चरण, दो चरणों में 3412 मरीजों का किया इलाज

जगदलपुर(विश्व परिवार)। शासन-प्रशासन की मंशा प्रत्येक जरूरतमंद व्यक्ति को स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिले यह प्रमुख लक्ष्य रहा है, इसी के तहत बस्तर जिले में नेत्र से संबंधित बीमारी मोतियाबिंद से जिले को निजात दिलाने के लिए विगत वर्ष दो चरणों में सघन मोतियाबिंद जांच एवं उपचार अभियान संचालित किया गया। जिसमें जिले के कुल 3774 मोतियाबिंद पीड़ित मरीजों का चिन्हांकन कर 3712 मरीजों का ऑपरेशन किया गया। यही नहीं जिले में समीपवर्ती जिलों एवं अन्य क्षेत्रों के मरीजों को मिलाकर कुल 4198 मोतियाबिंद पीड़ित मरीजों का ऑपरेशन किया गया। राज्य स्तर से गत वर्ष जिले को मोतियाबिंद ऑपरेशन हेतु 4500 का लक्ष्य आबंटित किया गया था। जिसके विरुद्ध 4198 मरीजों का ऑपरेशन कर लाभान्वित किया गया। कलेक्टर विजय दयाराम के. के निर्देशानुसार जिले में अब पुन: मोतियाबिंद जांच एवं उपचार अभियान चलाया जाएगा। ज्ञात हो कि कलेक्टर द्वारा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को बस्तर जिले को मोतियाबिंद मुक्त जिला बनाने हेतु विशेष प्रयास करने के साथ ही नेत्र चिकित्सा के लिए स्थापित विशेष अस्पताल अंबक की सुविधाएं मरीजों को जरूरत के अनुसार प्रदान करने हेतु निर्देशित किया गया है। कलेक्टर के निर्देश पर पूर्व में किये गए सघन सर्वे अभियान की तरह पुन: सघन मोतियाबिन्द सर्वे अभियान प्रारंभ किया जा रहा है। इस दिशा में स्वास्थ्य विभाग के समस्त कार्यकर्ताओं एवं मितानिनों को सघन सर्वे अभियान प्रारंभ कर नियमित रिर्पोटिंग करने के साथ ही संभावित मरीजों का सत्यापन कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल डिमरापाल एवं जिला महारानी अस्पताल में स्थित अंबक अस्पताल में ऑपरेशन करवाने के लिए निर्देश दिये गए हैं। ऑपरेशन के लिए मरीजों को लाने एवं घर तक पहुंचाने हेतु नि:शुल्क आवागमन सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

पुलिस व परिवहन विभाग ने रोड किनारे दोनो तरफ खड़े करने वाले ट्रकों पर की कार्रवाई

कवर्धा(विश्व परिवार)। कलेक्टर महोबे, पुलिस अधीक्षक डॉ.अभिषेक पल्लव के निर्देश पर कबीरधाम जिले में लगातार सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है इसके साथ ही यातायात के नियमों के पालन नहीं करने वालों पर चालानी कार्रवाई किया जा रहा हैं। आज पुलिस और परिवहन विभाग की संयुक्त टीम ने नेशनल हाईवे में रोड किनारे खड़े ट्रक पर ई-चालान के माध्यम से करवाई की। रक्षित निरीक्षक, यातायात प्रवीण खलखो, जिला परिवहन अधिकारी मोहन साहू ने बताया कि जिला कबीरधाम के परिवहन विभाग और यातायात पुलिस विभाग की ओर से संयुक्त रूप से कवर्धा रायपुर नेशनल हाईवे के ग्राम पनेका के पास ढाबा के सामने रोड़ किनारे दोनो ओर खड़े ट्रक पर ई चालान के माध्यम से 55 हजार 700 रुपए की चलानी कार्यवाही की गई। दोनों ओर ट्रक खड़ा होने से कभी भी दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। इससे पूर्व ट्रक ड्राइवर्स और ढाबा संचालकों को चेतावनी दी गई थी, लेकिन कोई सुधार नहीं देखते हुए ई चालान की कार्यवाही की गई, साथ ही ढाबा संचालकों को अपना पार्किंग व्यवस्था करने की चेतावनी दी गई। कार्यवाही के दौरान जिला परिवहन अधिकारी मोहन साहू, रक्षित निरीक्षक, यातायात प्रभारी प्रवीन खलखो, परिवहन निरीक्षक कुंजाम सहित यातायात, परिवहन विभाग की टीम उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शुक्रवार 03 मई 2024

व्यापार समाचार

एएए रेटिंग हासिल करने वाला भारत का पहला निजी बुनियादी ढांचा डेवलपर बना अदाणी पोर्ट्स एंड एसईजेड

अहमदाबाद(एजेंसी)। अदाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन (एपीएसईजेड) ने केयर रेटिंग्स द्वारा अपनी क्रेडिट रेटिंग को बढ़ाकर एएए करने की घोषणा की। कंपनी ने एक बयान में कहा, यह क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों द्वारा भारत में किसी भी जारीकर्ता को दी गई उच्चतम संभावित रेटिंग है, जो एपीएसईजेड की साख के सबसे मजबूत स्तर और उसके सभी वित्तीय मार्गदर्शन को पूरा करने की क्षमता को दर्शाता है। एपीएसईजेड के प्रबंध निदेशक, करण अदाणी ने कहा, हम अपने वित्तीय अनुशासन और डिलीवरेजिंग, विविध परिसंपत्ति आधार के साथ-साथ ग्राहक आधार और इस क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर उच्चतम लाभप्रदता के प्रति प्रतिबद्धता की मान्यता को महत्व देते हैं। इस विकास के साथ एपीएसईजेड यह मान्यता पाने वाला पहला बड़े आकार का निजी बुनियादी ढांचा डेवलपर बन गया है। रेटिंग एपीएसईजेड के मजबूत एकीकृत व्यवसाय मॉडल, प्रमुख उद्योग की स्थिति, स्वस्थ लाभप्रदता के साथ संचालन में मजबूत वृद्धि, उच्च तरलता और कम उत्तोलन के साथ मिलकर संचालित होती है।

नंद घर आंदोलन से जुड़े मनोज बाजपेयी

मुंबई। देश भर में 14 लाख आंगनवाड़ियों में आमूल बदलाव लाने से उद्देश्य से नंद घर ने अभिनेता मनोज बाजपेयी के साथ एक राष्ट्रीय आंदोलन ङ्क अगर बचपन से पूछा खाना खाया, तो देश का कल बनाया- का अनावरण किया। नंद घर के इस आंदोलन का उद्देश्य है, समग्र स्वास्थ्य देखभाल, गुणवत्तापूर्ण पोषण और बच्चों के लिए सर्वोत्तम प्री-स्कूल शिक्षा सुनिश्चित कर भारत की भावी पीढ़ी का पोषण करना। मनोज बाजपेयी का इस आंदोलन में शामिल होने के लिए स्वागत करते हुए, वेदांता के अध्यक्ष, श्री अनिल अग्रवाल ने कहा, प्रोजेक्ट नंद घर एक राष्ट्रीय आंदोलन है, जो स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान देने के साथ बच्चों और महिलाओं के समग्र कल्याण का समर्थन करता है। हमें खुशी है कि मनोज बाजपेयी जी ने इस विस्तृत होते आंदोलन को अपना समर्थन दिया है। उनकी निजी जीवन की कहानी हमारी भावी पीढ़ियों के जीवन को पोषित करने और बदलने के नंद घर के उद्देश्य से गहराई से मेल खाती है।'' आज इस दिल छू लेने वाले अभियान के लॉन्च में, मनोज बाजपेयी को एक युवा थिएटर अभिनेता के रूप में अपनी व्यक्तिगत यात्रा के बारे में बताते हुए देखा गया और उन्होंने अभिनय के सपने को पूरा करने के दौरान अपने लिए नियमित पौष्टिक भोजन सुनिश्चित करने में दोस्तों के अमूल्य योगदान को रेखांकित किया। बाजपेयी ने एक कलाकार के संघर्ष का मार्मिक वर्णन किया है, यह स्वीकार करते हुए कि किसी के सपनों को आगे बढ़ाने की ताकत भरे पेट और पौष्टिक भोजन से आती है।

एमएसआईएल ने कहा - जून के बाद बाजार में होगा पुनरुद्धार

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। कंपनी और उद्योग के बिक्री प्रदर्शन पर बोलते हुए उन्होंने कहा, फजून महीने तक मुझे लगता है कि चीजें कमोबेश ऐसी ही होंगी और जून के बाद शायद हम बाजार में पुनरुद्धार देखेंगे। कंपनी की घरेलू पीवी बिक्री अप्रैल 2023 में 1,37,320 इकाइयों की तुलना में महीने के दौरान 1,37,952 इकाइयों पर सपाट रही. इसी तरह, देश की दूसरी सबसे बड़ी पीवी निर्माता हुंडई मोटर इंडिया ने अप्रैल में 50,201 इकाइयों की घरेलू बिक्री की सूचना दी, जो पिछले साल के इसी महीने में 49,701 इकाइयों की तुलना में सालाना मामूली (एक प्रतिशत) वृद्धि है। संख्याएँ इनलाइन हैं । हालाँकि इसकी भविष्यवाणी करना बहुत मुश्किल है, लेकिन दो-तीन प्रतिशत की यह चपटी वृद्धि महीने-दर-महीने जारी रहेगी. यह जनवरी के अंत में हमने जो कहा था, उसके बिल्कुल अनुरूप है क्योंकि भू-राजनीतिक, ब्याज दरों और चुनावों के कारण अनिश्चितताएं थीं, इसलिए हालांकि ये अप्रत्याशित हैं, लेकिन ये सभी प्रत्याशित थे द्य एचएमआईएल के मुख्य परिचालन अधिकारी, तरुण गर्ग ने कहा कि नियमित आधार पर नए लॉन्च होते हैं इसलिए बाजार में कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा. 2022-23 में हम कोविड के बाद 20 प्रतिशत बढ़े, और पिछले वर्ष की तुलना में आठ प्रतिशत बढ़े । इसलिए भारत में असाधारण दो वर्षों की वृद्धि हुई है और दुनिया में अभी भी बहुत सारे देश हैं जो अभी तक नहीं पहुंचे हैं द्य पूर्व-कोविड स्तर, गर्ग ने जोड़ा। दोपहिया खंड में टीवीएस मोटर कंपनी की घरेलू बिक्री सालाना आधार पर 29 फीसदी बढ़कर अप्रैल में 3,01,449 इकाई रही जो पिछले साल के इसी महीने में 2,32,956 इकाई थी. सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया ने भी अप्रैल 2023 में 67,259 इकाइयों की तुलना में अपनी घरेलू बिक्री में 31 प्रतिशत की सालाना वृद्धि के साथ 88,067 इकाइयों की वृद्धि दर्ज की। Royal Enfield अप्रैल में एक अंक की वृद्धि (9 प्रतिशत) के साथ 75,038 इकाइयों की रिपोर्ट की गई, जबकि एक साल पहले इसी महीने 68,881 इकाइयों की तुलना में।

मस्क ने पूरी टेस्ला चार्जिंग नेटवर्क टीम को हटाया

नई दिल्ली(एजेंसी)। एलन मस्क ने एक नए छंटनी दौर में टेस्ला की पूरी चार्जिंग टीम को ही भंग कर दिया, जो सभी के लिए अप्रत्याशित और हैरान करने वाला फैसला है। टेस्ला के सुपरचार्जर नेटवर्क में छंटनी इसके कनेक्टर का उपयोग करने के लिए फोर्ड और जनरल मोटर्स जैसे टॉप वाहन निर्माताओं को शामिल करने के बावजूद हुई है। टेस्ला के सुपरचार्जर नेटवर्क में कनेक्टर तकनीक है जिसे उत्तरी अमेरिकी चार्जिंग स्टैंडर्ड (एनएसीएस) के रूप में जाना जाता है, इसे प्रमुख वाहन निर्माताओं द्वारा अपनाया जा रहा है। वरिष्ठ कर्मचारियों को एक ईमेल में, टेस्ला सीईओ ने उनसे कहा कि वे ऐसे कर्मचारियों को हटा दें जो स्पष्ट रूप से उत्कृष्ट, आवश्यक और भरोसेमंद परीक्षा पास नहीं करते हैं या इस्तीफा दे दें। चार्जिंग के प्रभावित कर्मचारियों में से एक विल जेमिसन ने अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट किया, उन्होंने हमारे पूरे चार्जिंग संगठन को जाने दिया। उन्होंने पोस्ट किया, चार्जिंग नेटवर्क, एनएसीएस और पूरे उद्योग में हम जो रोमांचक काम कर रहे थे, उसके लिए इसका क्या मतलब है मुझे अभी तक नहीं पता। यह कितना अजीब सफर रहा है। एलन मस्क के ईमेल के हवाले से टेकक्रंच की रिपोर्ट के अनुसार, टेस्ला कुछ नए सुपरचार्जर स्थानों का निर्माण जारी रखेगा।

टी20 विश्व कप के लिए टी नटराजन को नजरअंदाज किए जाने पर तमिलनाडु में विरोध प्रदर्शन

चेन्नई,(एजेंसी)। टी20 विश्व कप 2024 के लिए भारतीय टीम की घोषणा के बाद, तमिलनाडु में लोग लेफ्ट आर्म मीडियम फ़ास्ट बॉलर टी नटराजन को न चुने जाने के विरोध में उतर आए। अनुभवी डीएमके नेता टीआर बालू के बेटे और तमिलनाडु के उद्योग मंत्री टीआरबी राजा ने भी तेज गेंदबाज की अनदेखी के बाद अपना दुख जाहिर किया। राजा ने कहा कि नटराजन को भारतीय टीम में जगह नहीं मिलना दुर्भाग्यपूर्ण है। राज्य के उद्योग मंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, यह देखकर अच्छा लगा कि इस पर व्यापक रूप से चर्चा हो रही है! लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले तमिलनाडु के एथलीटों को कई बार दिल्ली ने उनकी सही जगह से वंचित कर दिया है! यह अब अधिक बार हो रहा है लेकिन यह शासन से परे है। कई खेलों में दिल्ली इसी तरह से काम करती है दिल्ली ने ज्यादातर समय दक्षिण के कई बेहद प्रतिभाशाली एथलीटों की ओर से आंखें मूंद ली हैं! खेल और विचारधारा से परे कई एथलीट यह जानते हैं! खुशी है कि नटराजन और हमारे अन्य लड़के वास्तव में बेहतर के हकदार हैं। पूर्व भारतीय टेस्ट खिलाड़ी और तमिलनाडु के लिए घरेलू क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वालों में से एक, एस बद्रीनाथ ने भी मंगलवार रात एक स्थानीय तमिल टेलीविजन शो में नटराजन को विश्व कप टीम से बाहर किए जाने पर निराशा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि नटराजन बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे और उन्होंने आईपीएल सीजन में अच्छी संख्या में विकेट हासिल किए थे। उन्होंने कहा, तमिलनाडु के खिलाड़ियों को भारतीय टीम में शामिल होने के लिए अन्य क्षेत्रों के खिलाड़ियों की तुलना में दोगुना प्रदर्शन करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि वह खुद भारतीय टीम में इस तरह के भेदभाव का शिकार हो चुके हैं। मौजूदा आईपीएल सीज़न में, नटराजन ने सनराइजर्स हैदराबाद के लिए 7 मैचों में 13 विकेट लिए हैं। तमिलनाडु के एक रणजी ट्रॉफी खिलाड़ी ने कहा, नटराजन अपने चरम पर प्रदर्शन कर रहे हैं और वह टीम में चुने गए दो तेज गेंदबाजों मोहम्मद सिराज और अर्शदीप सिंह से काफी ऊपर हैं। जबकि सिंह को 11 विकेट मिले हैं। मौजूदा आईपीएल में सिराज के नाम सिर्फ 6 विकेट हैं। उन्होंने कहा, हमें नहीं पता कि नटराजन को जगह क्यों नहीं मिली, जो किसी भी क्रिकेट प्रारूप में बाएं हाथ के घातक तेज गेंदबाज हैं।

नडाल ने चौथे दौर में हार के बाद मैड्रिड ओपन से ली विदाई

मैड्रिड, (एजेंसी)। राफेल नडाल ने चेक खिलाड़ी जिरी लेहेका से चौथे दौर में 5-7, 4-6 से हार के बाद मैड्रिड ओपन, एटीपी मास्टर्स 1000 टूर्नामेंट में प्रशंसकों से विदाई ली, जिसे उन्होंने अपने शानदार करियर के दौरान पांच बार जीता था। टूर्नामेंट के पांच बार के चैंपियन (2005, 2010, 2013, 2014 और 2017) ने लेहेका के खिलाफ अपनी मैड्रिड ओपन यात्रा का चौथे दौर का मैच दो घंटे और दो मिनट तक चला। एक जीत का मतलब मैड्रिड में स्पैनियार्ड के लिए जीत संख्या 60 होती, लेकिन 2003 में मैड्रिड एरेना में एलेक्स कोरेट्जा के खिलाफ अपने पहले मैच के बाद से उनकी गिनती अब हमेशा 59 जीत और सिर्फ 15 हार पर ही रहेगी। मैच के बाद, भावुक नडाल ने कोर्ट पर एक विशेष प्रस्तुति दी, जिसमें मैड्रिड ने अपने सबसे महान चैंपियन को अलविदा कहा और 2008, 10, 13-14 और 17 में उनके पांच खिताबों को चिह्नित करने वाले बैनर फहराए गए। एटीपी टूर ने नडाल के हवाले से कहा, यह मेरे लिए बहुत खास सप्ताह रहा है, कई मायनों में बहुत सकारात्मक, व्यक्तिगत रूप से और मेरे टेनिस के लिए। मुझे फिर से कोर्ट पर खेलने का मौका मिला। कुछ हफ्ते पहले, बार्सिलोना से दो दिन पहले, मुझे नहीं पता था कि मैं फिर से एक आधिकारिक मैच में प्रतिस्पर्धा करूंगा और मैंने अब तक दो सप्ताह तक खेला है, यह अविस्मरणीय है। केवल एक चीज जो मैं कह सकता हूं वह है धन्यवाद। यह एक अविश्वसनीय यात्रा रही है जो तब शुरू हुई जब मैं छोटा था। मैं पहली बार 2003 में मैड्रिड आया था, जब टूर्नामेंट इंडोर खेला गया था।

लखनऊ के कोच जस्टिन लैंगर ने मयंक यादव की चोट पर दिया अपडेट

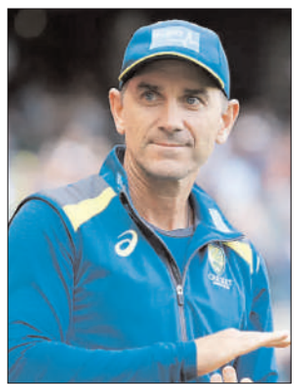

नई दिल्ली(एजेंसी)। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर ने स्टार तेज गेंदबाज मयंक यादव की चोट पर अपडेट देते हुए कहा है कि परफेक्ट रिहैबिलिटेशन से गुजरने के बावजूद, युवा खिलाड़ी को अभी भी थोड़ी परेशान है। लैंगर ने आगे कहा कि युवा तेज गेंदबाज का भी स्कैन कराया जाएगा। पेट के निचले हिस्से में दर्द के कारण पांच मैच न खेलने के बाद मयंक प्लेइंग-11 में लौटे। मंगलवार को एकाना क्रिकेट स्टेडियम में मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच में 3.1 ओवर में 31 रन देकर 1 विकेट के आंकड़े पर चोट के कारण उन्होंने मैदान छोड़ दिया। मैच के बाद लखनऊ के मुख्य कोच ने कहा, ऐसा लगता है कि उसे एक ही जगह पर दर्द है, उसका पुनर्वास बिल्कुल सही रहा है, उसने पिछले कुछ हफ्तों में दर्द रहित गेंदबाजी की है, वह अच्छी स्थिति में दिख रहा है। हालांकि, उसे फिर थोड़ी परेशानी हुई है जिस पर जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। एलएसजी के कप्तान केएल राहुल ने यह भी खुलासा किया कि मयंक ने उनके चौथे ओवर की पहली गेंद के बाद गेंदबाजी करते समय हुई असुविधा के बारे में शिकायत करने के लिए उनसे संपर्क किया था। राहुल ने मैच के बाद प्रेजेंटेशन के दौरान कहा, जितना अधिक वह खेलेगा, उतना ही अधिक सीखेगा कि कब क्या गेंदबाजी करनी है। अभी, हमने उसे अपने मन मुताबिक गेंदबाजी करने की खुली छूट दी है। यादव ने अब तक तीन आईपीएल मैच खेले हैं और छह विकेट लिए हैं, पीबीकेएस और आरसीबी के खिलाफ तीन-तीन विकेट लिए हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट ने अश्नीर ग्रोवर को भारतपे शेयरों में थर्ड पार्टी राइट बनाने से रोका

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने भारतपे के पूर्व प्रबंध निदेशक अश्नीर ग्रोवर के खिलाफ एक निरोधक आदेश जारी किया, जिससे फिनटेक कंपनी के सह-संस्थापक, भाविक कोलाडिया द्वारा उन्हें हस्तांतरित 16,110 शेयरों में किसी भी तीसरे पक्ष के हित या अधिकार बनाने से रोक दिया गया। यह आदेश न्यायमूर्ति प्रतीक जालान ने ग्रोवर के खिलाफ चल रहे मुकदमे के तहत कोलाडिया द्वारा दायर एक अंतरिम आवेदन के जवाब में जारी किया था। अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि ग्रोवर को कानूनी कार्यवाही के समापन तक शेयरों से संबंधित कोई भी तीसरे पक्ष की व्यवस्था करने से बचना चाहिए। ग्रोवर 2017 में सह-संस्थापक कोलाडिया और शाश्वत नाकरानी के भारतपे में शामिल हुए, 2018 में तीसरे सह-संस्थापक के रूप में उन्होंने पिछले साल सार्वजनिक रूप से कहा था कि वह इन शेयरों में किसी तीसरे पक्ष को शामिल नहीं करेंगे। यह घटनाक्रम इस साल की शुरुआत में नकरानी द्वारा दायर एक मुकदमे की त्वरित सुनवाई के लिए एक डिवीजन बेंच के आदेश का पालन करता है, जिसमें ग्रोवर को उनसे खरीदे गए अवैतनिक शेयरों में किसी तीसरे पक्ष के अधिकार को अलग करने, स्थानांतरित करने या बनाने से रोकने की मांग की गई थी। इससे पहले, एकल न्यायाधीश पीठ ने मुकदमे में अंतरिम आवेदन को खारिज करते हुए ग्रोवर को अवैतनिक शेयरों में तीसरे पक्ष के अधिकार बनाने से रोकने के नाकरानी के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया था। इस साल मार्च में उच्च न्यायालय ने एक आदेश जारी कर ग्रोवर को फिनटेक कंपनी, उसके पदाधिकारियों या अधिकारियों के खिलाफ अपमानजनक और अपमानजनक बयान देने से रोक दिया था। पिछले साल नवंबर में कोर्ट ने ग्रोवर पर 2 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम. सिंह ने ग्रोवर को 48 घंटे के भीतर अपने ट्वीट हटाने का निर्देश दिया था, जिसमें एसबीआई चेयरपर्सन को तुच्छ कहने वाला ट्वीट भी शामिल था। अदालत ने इकोनॉमिक टाइम्स को ग्रोवर द्वारा आरबीआई अध्यक्ष को लिखे गए पत्रों के आधार पर एक लेख हटाने का भी आदेश दिया था। फंड के दुरुपयोग के आरोप में ग्रोवर और उनकी पत्नी को 2022 में कंपनी से बर्खास्त किए जाने के कुछ महीनों बाद भारतपे ने हाईकोर्ट का रुख किया था। अपने मुकदमे में भारतपे ने कथित धोखाधड़ी और धन के दुरुपयोग के लिए ग्रोवर, उनकी पत्नी और उनके भाई से 88.67 करोड़ रुपये के नुकसान का दावा किया है।

टी20 विश्व कप में अफगानिस्तान की कप्तानी करेंगे राशिद खान

काबुल(एजेंसी)। टी20 विश्व कप में पूरा एक महीना बचा है. सभी टीमें अपनी तैयारियों को अंतिम रूप दे रही हैं. अब 2 जून से शुरू होने वाले टी20 विश्व कप के लिए अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने भी अपनी 15 सदस्यी टीम का ऐलान कर दिया है. इस टीम के अनाउसमेंट की सबसे खास बात उसके कप्तान है. एसीबी ने अनुभवी स्पिनर राशिद खान को टीम का कप्तान बनाया गया है. पहली बार स्पिनर राशिद खान टीम की कमान संभालेते हुए नजर आएंगे. अफगानिस्तान ने अपने स्क्वाड में विकेटकीपर के तौर पर रहमानुल्लाह गुरबाज और मोहम्मद इशहाक को जगह दी है. इसके अलावा बल्लेबाजी में गुलबदीन नाइब, करीम जन्नत और नांग्याल खरोती और अजमतुल्लाह उमरजई को टीम में जगह दी है. गुलबदीन नाइब ने भारत के खिलाफ जनवरी में खेली गई टी20 सीरीज में शानदार प्रदर्शन किया था. इसके अलावा आलराउंडर डिपार्टमेंट की कमान मोहम्मद नबी, राशिद खान निभाएंगे. अफगानिस्तान ने तेज गेंदबाजी क्रम में नवीन उल हक, फजल हक फारुकी, मुजीबुर्रहमान, फरीद अहमद मलिक को रखा है. स्पिन विभाग नूर अहमद, मोहम्मद नबी और खुद राशिद खान संभालते हुए नजर आएंगे. ऐसे में अफगानिस्तान काफी मजबूत टीम नजर आ रही है. अफगानिस्तान ने तीन रिजर्व खिलाड़ियों के नाम दिए हैं जिसमें हजरतुल्लाह जजई, सादिक अटल और सलीम सैफी को जगह मिली है.

रैपिडो और रायपुर ज़िला चुनाव कार्यालय की पहल मतदाताओं को प्रदान करेगी परिवहन सेवाएं

आम चुनाव 2024 के दौरान रायपुर में मतदाताओं के लिए लाए मुफ्त बाईक टैक्सी राईड्स और रैली का किया आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के लोकतांत्रिक ढांचे को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता के साथ भारत के प्रमुख कम्यूट ऐप रैपिडो ने राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए 'सवारी जिम्मेदारी की' पहल का लॉन्च किया है। रायपुर ज़िला चुनाव कार्यालय के सहयोग से रैपिडो 7 मई 2024 को रायपुर के मतदाताओं के लिए मुफ्त बाईक टैक्सी राईड उपलब्ध कराएगी। इसके अलावा रैपिडो ने शहर के निवासियों को मतदान के महत्व पर जागरुक बनाने के लिए शहर प्रशासन के साथ साझेदारी भी की है। 150 बाईक टैक्सी कैप्टन्स के साथ इस रैली को कलेक्टरेट परिसर, मल्टी पार्किंग, घड़ी चौक, रायपुर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर डॉ गौरव कुमार सिंह, आई.ए.एस.- कलेक्टर एवं डीएम, रायपुर; विश्वदीप, आईएएस, चीफ़ एक्ज़िक्टिव ऑफ़िसर, ज़िला पंचायत, रायपुर; और श्री अबिनाश

मिश्रा, आईएएस- कमिशनर नगर निगम, रायपुर मौजूद रहे, और नागरिकों को मतदान के लिए प्रोत्साहित किया।

चुनाव के दिन मतदाता रैपिडो ऐप पर कोड VOTENOW का उपयोग कर मुफ्त राईड पा सकते हैं और अपने लोकतांत्रिक अधिकार का उपयोग कर सकते हैं। नागरिकों के मतदान के अधिकार को बढ़ावा देना तथा चुनाव प्रक्रिया को अधिक समावेशी बनाना इस पहल का मुख्य उद्देश्य है। ये प्रयास रैपिडो के राष्ट्रव्यापी अभियान के अनुरूप हैं, जिसके तहत 100 से अधिक शहरों में चुनाव के दिन मुफ्त राईड उपलब्ध कराने के लिए 10 लाख से अधिक कैप्टन्स को लगाया गया है।

रायपुर ज़िला चुनाव कार्यालय के साथ रैपिडो की साझेदारी ऐसा ब्राण्ड बनने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है जो बेहतर समाज के निर्माण में सकारात्मक योगदान दे सके। रैपिडो के सह-संस्थापक पवन गुंटुपल्ली ने कहा, ''हम इस पहल के द्वारा सुनिश्चित करना चाहते हैं कि रायपुर में हर मतदाता भारतीय आम चुनाव 2024 के दौरान अपने मतदान के कर्तव्य को सफ़लतापूर्वक निभाएं। ये मुफ्त राईड्स उपलब्ध कराकर हम लोकतंत्र को बढ़ावा दे रहे हैं। छत्तीसगढ़ में हमारे रैपिडो कैप्टन सिर्फ ड्राइवर से अधिक हैं; वे नागरिक भागीदारी के दूत हैं, जो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की चुनावी प्रणाली में में अधिक से अधिक मतदान के सक्षम बनाने में योगदान दे रहे हैं।'' डॉ गौरव कुमार सिंह, कलेक्टर एवं डीएम, रायपुर ने कहा, ''यह देखकर अच्छा लगता है कि लोकतंत्र की भावना का जश्न मनाने के लिए निजी कंपनियां सरकार के साथ मिलकर काम कर रही हैं। रैपिडो की पहल 'सवारी ज़िम्मेदारी की' लोकतंत्र में सामुहिक कार्य के महत्व की पुष्टि करती है। आम चुनाव 2024 के दौरान मुफ्त बाईक टैक्सी राईड उपलब्ध कराकर रैपिडो न सिर्फपरिवहन के साधन उपलब्ध कराएगी बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगी कि हर नागरिक की आवाज़ लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपना योगदान दे।'

छत्तीसगढ़ राज्य चुनाव आयोग के साथ रैपिडो की साझेदारी ऐसा ब्राण्ड बनने की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है जो बेहतर समाज के निर्माण के लिए प्रयासरत है। इस तरह की पहलों के माध्यम से रैपिडो देश भर के लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रयासरत है। यह पहल छत्तीसगढ़ में मतदाताओं को सशक्त बनाने और उन्हें अपने मतदान के अधिकार का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाने की रैपिडो की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, शुक्रवार 03 मई 2024

अनवर ढेबर, अरविंद सिंह और अरुण पति त्रिपाठी को 14 दिनों की रिमांड

रायपुर (आरएनएस)। आबकारी घोटाले मामले में ईओडब्ल्यू द्वारा जेल में बंद आरोपी अनवर ढेबर, अरविंद सिंह और अरुण पति त्रिपाठी को फिर से 14 दिनों की रिमांड पर भेजा गया है। इसकी पहले भी विशेष कोर्ट में सभी को 14 दिन तक न्यायिक रिमांड पर भेजा तथा रिमांड खत्म होने पर गुरुवार को कोर्ट ने न्यायिक रिमांड बढ़ाते हुए दुबारा 14 दिन के लिए जेल भेजा दिया है। वहीं अनवर ढेबर की लगाई जमानत याचिका पर कोर्ट ने 4 मई को सुनवाई की तारीख की तय की है। बता दें कि छत्तीसगढ़ शराब घोटाले मामले में ईडी भी नए सिरे से जांच कर रही है।

संक्षिप्त समाचार

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने मुख्यमंत्री साय से की सौजन्य मुलाकात

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने मुख्यमंत्री निवास में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से सौजन्य मुलाकात की। श्री साय ने पुष्प गुच्छ भेंट कर विनोद तावड़े का स्वागत किया और छत्तीसगढ़ में उनकी सरकार द्वारा 100 दिन में किये गए जनहित, विकास के कार्यों सहित विभिन्न समसामयिक विषयों पर सारगर्भित चर्चा की। मुलाकात के बाद श्री साय ने विनोद तावड़े की तारीफ में कहा कि एक सरल, सहज व्यक्तित्व के धनी श्री विनोद तावड़े जी से आज मुख्यमंत्री निवास में आत्मीय मुलाकात हुई। तावड़े जी कुशल संगठनकर्ता हैं, जिसका लाभ भारतीय जनता पार्टी को मिल रहा है।

रायपुर लोकसभा क्षेत्र में पर्ची वितरण कार्य एवं मतदाताओ से विनम्र अपील

रायपुर (विश्व परिवार)। शंकर नगर वार्ड क्रमांक 30 में आज पार्षद सुमन राम प्रजापति के नेतृत्व में पर्ची वितरण किया गया एवं प्रत्येक घर घर जा कर नरेंद्र मोदी जी को पुनः प्रधानमंत्री बनाने एवं बृजमोहन भैया को सर्वाधिक मतों से विजयी बनाने हेतु अधिकतम मतदान हेतु मतदाताओं से सम्पर्क किया गया। इस दौरान,पार्षद सुमन प्रजापति शक्ति केंद्र प्रभरीं राम प्रजापति, बूथ अध्यक्ष वीरमणि चौबे,बूथ अध्यक्ष महेंद्र धनकर,भाजपा कार्यकर्ता शंभु लौवंशी, वैभव शर्मा, भारती यादव जी उपस्तिथ रही।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने की खैरागढ़ गौशाला में होने वाले रिसर्च की सराहना

कहा- लोकसभा चुनाव के बाद करेंगे भ्रमण

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री अरूण साव व विजय शर्मा से मनोहर गौशाला खैरागढ़ के ट्रस्टी पदम डाकलिया (अखिल जैन) ने सौजन्य मुलाकात की। तीनों मंत्रियों ने गौशाला में हो रहे सराहनीय कार्य की सराहना की। साथ ही जल्द ही सपरिवार गौशाला भ्रमण पहुंचने का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री ने मनोहर गौशाला के ट्रस्टी को 40 मिनट तक अपना समय दिया। इस दौरान उन्होंने गौशाला से संबंधित पुस्तक को ध्यान से पढ़ा। साथ ही वहां होने वाले रिसर्च और कामधेनु माता के बारे में उत्सुकता से जानकारी ली। इस पर पदम डाकलिया ने उन्हें फसल अमृत, गौ अर्क सहित गौशाला में होने वाले रिसर्च और बनने वाले उत्पाद के बारे में बताया। मुख्यमंत्री ने लोकसभा चुनाव के बाद सपरिवार खैरागढ़ पहुंचकर गौशाला का अवलोकन करने का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने बताया कि उन्होंने अपने निवास पर दो गायें पाल रखी हैं, जिन्हें वे प्रतिदिन समय देते हैं। इस दौरान उन्हें गौशाला की तरफ से वैदिक साबुन, गोबर की माला, गोबर की गणेश प्रतिमा, गोबर के सिहासन, गोमूत्र अर्क, फसल अमृत भेंट की गई। इस मौके पर गौ सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष बिसेसर पटेल, जीव जंतु कल्याण बोर्ड भारत सरकार के डायरेक्टर सुनील मानसिंगा मौजूद थे।

डिप्टी सीएम 15 दिनों के भीतर पहुंचेंगे गौशाला : मनोहर गौशाला के ट्रस्टी ने डिप्टी सीएम विजय शर्मा व अरूण साव से भी अलग-अलग मुलाकात की। इस दौरान दोनों मंत्रियों ने करीब 20-20 मिनट का समय दिया। शर्मा ने गौशाला के कार्यों की सराहना करते हुए 15 दिनों के भीतर खैरागढ़ पहुंचकर गौशाला के भ्रमण की बात कही। दोनों डिप्टी सीएम को भी गोबर से बनी मूर्ति, माला, अर्क, फसल अमृत भेंट की गई।

कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह पैरेंट्स मीट में मिले पालकों और शिक्षकों से

कलेक्टर ने कहा- अच्छे नंबर को ही श्रेष्ठता का मापदंड न मानें, बच्चों के सकारात्मक पक्ष को उनकी सफलता का मंत्र बनाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। विद्यार्थियों को शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा में सर्व प्रथम होने का मानसिक दबाव देने की जगह पालकों व शिक्षकों को उनकी नैसर्गिक प्रतिभा के बल पर निश्चिंत भाव से आगे बढ़ने की प्रेरणा देकर सर्वश्रेष्ठ नागरिक के तौर पर पहचान बनाने की दिशा में स्कूल व परिवार को एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। असफलताएं हमेशा उम्मीद व सफलता के नए अध्याय की पहली सीढ़ी होती है, इसलिए किसी भी बच्चे की असफलता को उनके श्रेष्ठता का मापदंड नहीं माना चाहिए। उत्काशय के उद्गार रायपुर जिला कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने शहीद स्मारक ऑडिटोरियम के खचाखच भरे हॉल में पैरेंट्स मीट में व्यक्त किया। स्कूल शिक्षा विभाग ने रायपुर के विद्यार्थियों को दिशा देने पालकों के साथ यह संवाद विशेष तौर पर आयोजित किया था।

लंबे संघर्ष से मिले मतदान के अधिकार का सम्मान करें, 7 मई को मतदान जरूर करें

कलेक्टर डॉ. सिंह ने स्कूली विद्यार्थियों के पालकों से लगभग एक घंटे तक संवाद किया और बच्चों के मनोविज्ञान, उनके समग्र विकास, चुनौतियों से जूझने की प्रवृत्तियों पर गहनता से विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठता अंक आधारित न होकर व्यक्तित्व आधारित होना चाहिए, जिससे कि विद्यार्थी अपने सकारात्मक पक्षों को आगे लेकर जीवन की चुनौतियों को पार करने की राह स्वयं निकाल सके। -शेष पेज 2 पर

आरआईटीईई और बार्क के बीच हुआ एमओयू

रायपुर (विश्व परिवार)। विगत दिनों राजधानी की 29 वर्ष पुरानी प्रमुख तकनीकी संस्था रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर, मुम्बई के बीच एमओयू हस्ताक्षर किया गया। एमओयू पर रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की ओर से महानदी एज्यूकेशन सोसायटी के सचिव श्री शैलेन्द्र जैन एवं भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर से श्री डेनियल बाबू, पी., हेड, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और कोलोब्रेशन डिवीजन ने हस्ताक्षर किए।

भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर के द्वारा डीएई सोशल इनिशिएटिव के तहत रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में आकृति केंद्र की स्थापना की गई है। जिसका उद्देश्य डीएई-बार्क की तकनीकीयों को साझा करके ग्रामीण और आंतरिक क्षेत्रों में उद्यमिता को प्रोत्साहित करना, गांवों में ही आजीविका प्रदान करना आदि है। आरआईटी में स्थापित यह आकृति केन्द्र उभरते उद्यमियों और बार्क के बीच एक सेतू का कार्य करेगा। इस केन्द्र में प्रौद्योगिकी प्रदर्शन, प्रचार-प्रसार, प्रदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में प्रमुख रुप से सीजीकॉस्ट के महानिदेशक श्री एस.एस. बजाज, भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर, मुम्बई से टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और कोलोब्रेशन सेंटर की मुख्य अधिकारी, श्रीमती भारती भालेराव, महानदी एज्यूकेशन सोसायटी के अध्यक्ष श्री स्वरुपचंद जैन, कांगेर वेली एकेडमी सोसायटी के संरक्षक श्री रतनलालजी बड़जात्या, अध्यक्ष श्री संजय जैन, उद्योगपति श्री पी.सी. जैन, सुमीत जैन, आरआईटी ग्रुप के डायरेक्टर द्वय डॉ. जयेश कारिया एवं डॉ. पी. बालाकृष्णन, रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्राचार्य डॉ. मनीष सकलेचा, आरआईटीईई कॉलेज ऑफ फार्मेसी के प्राचार्य डॉ. सत्यब्राता भांजा सहित सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षिकाएं और बडी संख्या में विद्यार्थीगण उपस्थित थे।

ओंकार सिंह छत्तीसगढ़ एडवरटाइजिंग एजेंसी एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं अफसर खान महासचिव, नई कार्यकारिणी भी गठित

रायपुर (विश्व परिवार)। ओंकार सिंह को छत्तीसगढ़ एडवरटाइजिंग एजेंसी एसोसिएशन का अध्यक्ष एवं महासचिव अफसर खान की नियुक्त किया गया है, एड एजेंसी के चुनाव अधिकारी दीपक जैन, संरक्षक शिवाजी मंथानी व अजय जैन ने चुनाव कराने का निर्णय लिया, जिसका सभी सदस्यों ने समर्थन किया। इस चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए सभी सदस्यों ने एक मत से अनुभवी ओंकार सिंह (मीतनिशा एड.) को सर्वसहमति से अध्यक्ष एवं महासचिव अफसर खान को नियुक्त किया। एटवरटाइजिंग एजेंसीज एसोसिएशन ऑफ छत्तीसगढ़ के नव निर्वाचित अध्यक्ष ओंकार सिंह ने नई कार्यकारिणी गठित की। इस नई कार्यकारिणी में संरक्षक अजय जैन, दीपक जैन, शिवाजी मंथानी, महासचिव अफसर खान (.ा्च एड.), उपाध्यक्ष रितेश अग्रवाल (राघव एड.) सांस्कृतिक सचिव- मनीष राज्यवर्धन (एम्बेसी कॉरपोरेट प्रमोशन), ऋषभ जैन (शांति विजय एड.) कोषाध्यक्ष हसन नकवी(उत्कल एड.), सहसचिव- विजय घोष (विजय एड.) जनसंपर्क अधिकारी विरेन्द्र शुक्ला (छत्तीसगढ़ डेल्टा) के अलावा अन्य सदस्य इंदिरा जैन, अतुल जैन, राजीव पाठक, राजेश, दुग्गड, एवं प्रणय चन्द्राकर, नितिन गिरिभट्ट, भीमसेन खन्ना, गिरीश अवधिया, अरिहंत दुग्गड़ शामिल हैं। होडिंग के लिए भी पांच सदस्यों की कमेटी गठित की गई है जिसमें मनमोहन पारख, शिवाजी मत्थनी, अजय जैन, पंकज गुप्ता, प्रबोध जैन, शामिल हैं।

स्वस्थ लोकतंत्र के लिए मतदान जरूरी, साथ ही मतदाताओं का जागरूक होना भी आवश्यक

कहा जाता है कि स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का वास होता है। इसलिए तन-मन को स्वच्छ, स्वस्थ रखना बहुत ही आवश्यक है। इसी तरह स्वस्थ लोकतंत्र के लिए, शत-प्रतिशत मतदान हो इसके लिए मतदाताओं में मतदान के प्रति जागरूकता होना भी आवश्यक है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र देश भारत में लोकसभा निर्वाचन 2024 को लेकर भारत निर्वाचन आयोग ने 16 मार्च 2024 को चुनावी तिथियों के घोषणा की और इस तरह देश में आदर्श आचार संहिता प्रभावशील है।

देश के 543 लोकसभा सीटों के लिए 7 चरणों में मतदान होना है। इन 543 सीटों में अनुसूचित जाति के लिए 84, अनुसूचित जनजाति के लिए 47 सीटें आरक्षित हैं तो 412 सीट अनारक्षित है। इसके साथ ही चार राज्यों अरुणाचल प्रदेश के 60, सिक्किम के 32, आंध्रप्रदेश के 175 एवं ओडिशा के 147 सीटों के लिए विधानसभा चुनाव होंगे।

28 राज्यों के 524 व 8 केंद्र शासित प्रदेशों के 19 सीटों में होने वाले चुनाव को लेकर भारत निर्वाचन आयोग लगातार बैठक, दिशा-निर्देश, प्रशिक्षण, जनजागरूकता, सुरक्षा, साधन- संसाधन आदि पर राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से सतत समन्वय बनाए हुए हैं। वैसे तो देश के 21 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों की 102 संसदीय सीटों में प्रथम व द्वितीय चरण के मतदान हो चुके हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य के बारे में बात करें तो यहां 11 लोकसभा सीट हैं, जिसमें 4 सीट अनुसूचित जनजाति, 1 सीट अनुसूचित जाति व 6 सीट अनारक्षित है। इन 11 लोकसभा सीटों के लिए तीन चरणों में मतदान होना है। पहले चरण में 19 अप्रैल को बस्तर लोकसभा सीट तथा द्वितीय चरण में 26 अप्रैल को राजनांदगांव, महासमुंद एवं कांकेर सीटों के लिए मतदान हो चुके हैं। इन दोनों चरणों के मतदान प्रतिशत को देखें तो बस्तर में 68.31 प्रतिशत, वहीं राजनांदगांव में 77.42 प्रतिशत, कांकेर 76.23 प्रतिशत व महासमुंद लोकसभा सीट में 75.02 प्रतिशत मतदान हुए हैं। इस तरह राज्य में दूसरे चरण का मतदान प्रतिशत 76.24 रहा है। अब 7 मई को होने वाले तृतीय चरण में छत्तीसगढ़ के सरगुजा, रायगढ़, जांजगीर-चाम्पा, कोरबा, बिलासपुर, दुर्ग व रायपुर के अलावा देश के 12 राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों के 94 सीटों पर मतदान होगा। चौथे चरण में 10 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के 96 सीटों के लिए 13 मई, पांचवां चरण में 8 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेश के 49 सीटों के लिए 20 मई, छठवां चरण में 7 राज्यों के 57 सीटों के लिए 25 मई और सातवां व आख़िरी चरण में 8 राज्यों व केन्द्र शासित राज्यों के 57 सीटों के लिए 1 जून को मतदान होंगे।

जब हम चुनाव के महत्वपूर्ण कड़ी, मतदाता और मतदान पर बात करें तो शहरी मतदाता की अपेक्षा ग्रामीण मतदाताओं का मतदान के प्रति ज्यादा उत्साह दिखाई पड़ता है। यह कहना उचित होगा कि हमें चंहुओर विकास तो चाहिए लेकिन विकास के लिए मतदान में हिस्सा नहीं लेना यह कहाँ न्याय संगत होगा ? शहरी मतदाताओ को ज्यादा पढ़े-लिखे, अपने अधिकारों के प्रति ज्यादा सचेत माना जाता है। ऐसे में मतदान को लेकर शहरी मतदाताओं की रूचि ग्रामीण मतदाताओं की अपेक्षा कम होना निःसन्देह चिंता का विषय होता है।

हालांकि देश में पहला आम चुनाव अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952 के बीच 499 सीटों के लिए कठोर जलवायु और चुनौतीपूर्ण व्यवस्थाओं के कारण 68 चरणों में चुनाव हुआ था। इसके पहले वर्ष 1949 में चुनाव आयोग बनाया गया और वर्ष 1950 में सुकुमार सेन को पहले मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया। उस समय देश की जनसंख्या 36 करोड़ से अधिक थीं और उस आम चुनाव में 17 करोड़ से अधिक मतदाताओ ने भाग लिया यानी 44-45 प्रतिशत के आसपास मतदान हुआ था। उस दौर में शिक्षा, प्रचार-प्रसार और अन्य सुविधाओं का कम होना भी कम मतदान होने का मुख्य कारण था। लेकिन तब से भारत में मतदाताओं की संख्या, मतदान प्रतिशत और मतदान के प्रति जागरूकता लगातार बढ़ी है।

मताधिकार एक मौलिक अधिकार है तो कर्तव्य भी है ऐसे में अपने अधिकार व कर्तव्य को भली-भांति समझते हुए मतदान के लिए पहुंचना आवश्यक है। जब स्वयं मतदान के लिए तैयार होंगे, स्वयं मतदान करने पहुंचेंगे, जब अपने अधिकार को जानेंगे, जब अपने कर्तव्य को समझेंगे व निभाएंगे तो निश्चित ही देश व प्रदेश का विकास तेज गति से आगे बढ़ेगा।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा समय-समय पर किए गए चुनाव सुधार, आवश्यक व्यवस्था, स्वतंत्र, निष्पक्ष, भयमुक्त निर्वाचन के लिए नियम-कानून बनाए गए। इसके अलावा मतदाताओं में लगातार मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए भारत निर्वाचन आयोग से लेकर जिला निर्वाचन आयोग द्वारा अलग- अलग विधाओं, तकनीकी उपायों के माध्यम से, नई-नई गतिविधियों संचालित कर शत-प्रतिशत मतदान हो इसके लिए लगातार प्रयासरत हैं।

मतदाताओं की भागीदारी और जागरूकता से ही मतदान प्रतिशत बढ़ने की संभावना है। इसके लिए शासकीय, अशासकीय संस्थाओं व प्रत्येक वर्गों के मतदाताओं द्वारा सक्रियता निभाने से एक स्वस्थ, मजबूत लोकतंत्र की नींव और मजबूत होगी।

लेखक : विजय मानिकपुरी
सहायक जनसंपर्क अधिकारी)

यात्रियों की सुरक्षित यात्रा हेतु चलाई जा रही है 07 दिनों का अग्नि सुरक्षा सप्ताह

रायपुर (विश्व परिवार)। रेलवे बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशानुसार रायपर मंडल से गुजरने वाली सभी गाड़ियों में 01 मई से 07 मई 2024 तक अग्नि सुरक्षा सप्ताह चलाया जा रहा है। यात्री सुरक्षा रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। अग्नि सुरक्षा जागरूकता सप्ताह सुरक्षित यात्रा वातावरण बनाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यात्रियों को ट्रेनों में यात्रा के दौरान अग्नि सुरक्षा के महत्व से अवगत कराना तथा जागरूकता अभियान चलाकर आगजनी की घटनाओं के जोखिम को कम करना है।

ट्रेनों के यात्रियों को अग्नि सुरक्षा जागरूकता के महत्व की जानकारी तथा फ्रंट लाइन कर्मचारियों को अग्निशमन यंत्र चलाने का दिया जा रहा है प्रशिक्षण

इसी कड़ी में रायपुर मंडल द्वारा मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों तथा मण्डल से गुजरने वाली सभी ट्रेनों में विभागीय स्तर पर आग की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चलाई जा रही है। गाड़ियों के पैंट्रीकारों व कोचों में अग्नि सुरक्षा की जांच की जा रही है। यात्रियों को ट्रेनों में यात्रा करते समय अग्नि सुरक्षा के महत्व के बारे में जानकारी दी जा रही है तथा यात्रियों को यात्रा के दौरान ज्वलनशील सामानों के साथ यात्रा नहीं करने के प्रति जागरूक किया जा रहा है। उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से भी प्रतिबंधित सामानों को ट्रेन में नहीं ले जाने के प्रति जागरूक किया जा रहा है। आपातकालीन स्थिति में आग की रोकथाम के लिए स्टेशनों और गाड़ियों के कोचों में अग्निशमन यंत्र भी उपलब्ध कराए गए है। साथ ही गाड़ियों व विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत रेलकर्मियों को अग्निशमन यंत्र का प्रयोग करने में दक्ष करने हेतु प्रशिक्षण अभियान चलाया जा रहा है जिससे कि वे कार्यालयों एवं गाड़ियों में उपलब्ध अग्निशमन यंत्र का प्रयोग कर अग्नि दुर्घटना का बचाव प्रभावी रूप से कर सकें।

रेलवे प्रशासन को पूर्ण विश्वास है कि इस अभियान से यात्रियों में बेहतर सुरक्षित यात्रा के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में मदद मिलेगी।

मतदान से एक दिन पहले और मतदान दिवस के दिन प्रकाशित होने वाले राजनैतिक विज्ञापनों का प्रमाणन जरूरी

रायपुर (विश्व परिवार)। सभी राजनैतिक दलों, रायपुर लोकसभा क्षेत्र के लिए निर्वाचन लड़ने वाले सभी प्रत्याशियों को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देश अनुसार मतदान दिवस एवं मतदान से एक दिन पूर्व मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों के विज्ञापनों का प्रमाणन मीडिया प्रमाणन एवं निगरानी समिति (एमसीएमसी) से अनिवार्य रूप से कराना होगा। इस संबंध में जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने जरूरी निर्देश भी जारी किए है।

रायपुर लोकसभा क्षेत्र में 07 मई मंगलवार को तीसरे चरण में वोट डाले जाएंगे, इसे देखते हुए 06 व 07 मई को प्रिंट मीडिया में प्रकाशित किए जाने वाले ऐसे तमाम राजनीतिक विज्ञापनों को राज्य स्तर या जिला पर गठित प्रमाणन व मीडिया निगरानी समिति (एमसीएमसी) से पूर्व-प्रमाणीकरण कराना अनिवार्य है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए गए है। इन दोनों दिन राजनीतिक लाभ लेने व मतयाचना के लिए राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों द्वारा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कराया जाता है।

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार राज्य स्तर पर एक राज्य स्तरीय एमसीएमसी कमेटी मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय द्वारा गठित की गई है, राज्य स्तरीय कमेटी में राजनीतिक दलों द्वारा प्रकाशित कराये जाने वाले राजनीतिक विज्ञापनों का प्रमाणीकरण कराया जा सकता है।

सड़क सुरक्षा एवं मतदान जागरूकता के लिए हेलमेट रैली

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर शहर के ऑक्सीजोन परिसर गेट के समीप में मंगलवार प्रातः 08 बजे से मतदान एवं सड़क सुरक्षा जन जागरूकता, के लिए मोटर सायकल हेलमेट रैली, नुक्कड़ नाटक एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन जिला प्रशासन के सानिध्य में रैपिडो बाईक टैक्सी, अंतर्विभागीय लीड एजेंसी (सड़क सुरक्षा), स्टे फिट विथ मी ग्रुप, सहित विभिन्न सामाजिक संगठनो के द्वारा किया गया। इस अवसर पर पारंपरिक रूप से आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला में स्वास्थ्य संवर्द्धन के लिए एरोबिक्स, जुंबा, सड़क सुरक्षा तथा मतदाता जागरूकता हेतु संगीतमय नुक्कड़ नाटक सहित अन्य रोचक कार्यक्रमों के साथ दुर्घटनाओं से बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से बताया गया। अंतर्विभागीय लीड एजेंसी सड़क सुरक्षा, अध्यक्ष संजय शर्मा ने सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के उपायों के बारे में अवगत कराते हुए बताया कि मात्र सीट बेल्ट एवं हेलमेट लगाने मात्र से सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु की संभावना लगभग 40 प्रतिशत तक कम हो जाती है गत वर्ष सड़क दुर्घटनाओंमें मृत्यु कारित 4017 लोगो ने हेलमेट एवं 673 ने सीट बेल्ट नहीं पहना था। इस अवसर पर स्टे फिट विथ मी ग्रुप प्रमुख शुभांगीजी एवं टीम ने उर्जावान जुम्बा तथा स्वास्थ्य वर्द्धन के लिये ऐरोबिक्स के साथ-साथ नशे में वाहन चालन सहित अन्य लापरवाहियों से परिवार/ समाज पर दुष्प्रभाव के बारे में अत्यंत रोचक नुक्कड़ नाटक की संगीतमय प्रस्तुति दी गई। रायपुर कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह द्वारा ए.आई.जी. ट्रैफिक संजय शर्मा, सी.ई.ओ. जिला पंचायत विश्वदीप, नगर निगम कमिशनर अविनाश मिश्रा की उपस्थिति में जनसमुदाय को निष्पक्ष एवं निडर होकर मतदान हेतु शपथ दिलाई गई। तत्उपरांत मोटर सायकल हेलमेट, जन-जागरूकता रैली मल्टीलेवल पार्किंग, भगत सिंह चौक तेलीबांधा, तालाब, पचपेढी नाका होते हुए शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुए वापस कलेक्ट्रेट परिसर में संपन्न हुई। इस आयोजन में मतदान समन्वयक कामिनी बावनकर, रैपिडो के तेजपाल भम्बू, अंबर आलम, राकेश प्रधान, विभिन्न आयु वर्ग के विशाल जन-समुदाय, प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस कर्मियों सहित विभिन्न सामाजिक संस्थानों के प्रतिनिधि, मीडिया कर्मी, योग साधक उपस्थित रहे।

छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा प्रथम बार किया जा रहा है समर कैंप का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा संचालित वाणी वाचन श्रवण बहु प्रशिक्षण पुनर्वास केंद्र में इस वर्ष छत्तीसगढ़ में प्रथम बार दिव्यांग बच्चों हेतु समर कैंप का आयोजन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न प्रकार की एक्टिविटी सम्मिलित है इस कैंप में अपने बच्चों को सम्मिलित कर पंजीयन करवा सकते हैं पंजीयन 30 अप्रैल से 6 मई तक होना है, समर कैंप 10 मई 2024 से 10 जून 2024 तक है कैम्प 10 मई से 10जून तक चलेगा।

गंजेपन का ईलाज
अत्याधुनिक तकनीक द्वारा केश प्रत्यारोपड़ FUT एवं FUE तकनीक द्वारा गंजेपन का ईलाज
कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी. के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay 9827144371

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
G.S.T. रिटर्न | Food Licence
इन्कम TAX फाईल | M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड | प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस | डिजिटल सिग्नेचर
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354